जनवरी-मार्च- 2019

ISSN : 2321-7677 Bhojpuri Sammelan Patrika

भाषा-साहित्य-संस्कृति-समाज आ विकास खातिर समर्पित

भोजपुरी

सम्मेलन पत्रिका



अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका

वर्ष 29, अंक- 1-3, पूर्णक 347-349, जनवरी-मार्च 2019, दाम पचीस रूपया

महामंत्री
डॉ. गुरुचरण सिंह
2, बाल भारती पथ, सिविल लाइन्स
सासाराम (रोहतास) 821115
मोबाइल 9431844300

अध्यक्ष
डॉ० रिपुसूदन प्र० श्रीवास्तव
रोड नं०-2, पड़ाव पोखर
आमगोला, मुजफ्फरपुर
मोबाईल 9431241274

सलाहकार संपादक
भगवती प्रसाद द्विवेदी
मोबाइल - 9430600958

कार्यकारी संपादक
डॉ0 महामाया प्रसाद विनोद
मोबाइल 9430054236

संपादन सहयोग
दिलीप कुमार
मो0- 7488489031

संपादकीय सम्पर्क एवं कार्यालय
डॉ0 महामाया प्रसाद विनोद, बी-12 आश्रय होम्स,
आरा गार्डेन रोड, जगदेव पथ, पटना- 800014
मो0- 9430054236, 8210409370

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे।
लेखन, संपादन अवैतनिक।

अ०भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
वार्षिक सदस्यता शुल्क 51 रुपया सालाना
आजीवन सदस्यता शुल्क 551 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1501 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया
सम्मेलन के सदस्य खातिर
वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुपया
प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

सूची

• संपादकीय

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति
के उज्ज्वल अतीत —डॉ. महामाया प्र0 विनोद 4

• थाती

1. सारन के भोजपुरी : बोली से साहित्य तक
—प्रो0 हरिकिशोर पांडेय 6
2. आलोचना के शिखर पुरुष : डॉ. नामवर सिंह — 12

• सरधा के अँजुरी

3. अध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित
शख्सियत : प्रो. ब्रजकिशोर —भगवती प्र0 द्विवेदी 14

• व्यंग्य

4. अथ कटहर पुरान —गंगा प्रसाद अरुण 18

• निबंध

5. गया : पितरन के तृप्ति आउर मुक्ति के धार्मिक शहर
—डॉ0 सत्येन्द्र प्रसाद सिंह 21

• गीत

6. गीत किसान के —डॉ. राजकुमार विष्णुपुरी 28
7. दर्द बन के छा गइल —रिपुंजय निशान्त 29

• संस्मरण

8. साहित्य साधिका डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य —विश्वनाथ शर्मा 30
9. भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार : रामनाथ पाण्डेय
—शोधार्थी, प्रियंका 36

• विज्ञान

10. जिनगी के जरूरत : पानी —ई. राजेश्वर सिंह 33

• बात–चीत

11. श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' —दिलीप कुमार 40

• प्रेरक कथा–12

12. पूत के पाँव पलने में..... —डॉ. महामाया प्रसाद विनोद 44

• पुस्तक–समीक्ष

13. जिनगी के तस्वीर : अन्हार के साँच–रामेवश्वर नाथ मिश्र 'विहान' 46

• साहित्य–हलचल

14. बच्चू पांडेय जयन्ती समारोह 49
15. भोजपुरी भाषा एवं साहित्य पर गोष्ठी 50

❖❖❖

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के उज्ज्वल अतीत

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के उज्ज्वल अतीत के कपाल पर आज मुट्ठी भर अधकचरा तथाकथित गीतकार, कलाकार आदि कलंक के करिया टीका लगा रहल बा । भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' आपन कविता द्वारा भोजपुरी संस्कृति के जवन परिचय देले रहनी, आज कुछ लोग अपना कुकृत्य से ओकरा के अर्थहीन कर रहल बा । कविता के पॉती 'झूठ ना बखाने जाने' का जगहा आज झूठ, फरेब आ घोटाला के बोलबाला देखे के मिल रहल बा । 'दीठ ना लगावे जाने आन के बहुरिया' के दुतकारत अपहरण, बलात्कार आ हत्या से बहुरिये ना, बेटियो त्रस्त बिया । 'बानी मरदानी जाने, चाल मस्तानी भानु, होला एक पानी के मरद भोजपुरिया' आज अर्थहीन भ गइल बा । समाज में फइलल कवनो कुरीति, विकृति, नैतिकता में गिरावट आ संस्कृति के पतनोन्मुखी राह से सही दिशा अगर कोई प्रदान कर सकेला त समर्थ साहित्यकार, कवि आ विचारक । दुर्योग ई बा कि भोजपुरी के संत कवियन, समर्थ साहित्यकारन के जोगावल थाती का छाती पर तथाकथित टूटपुँजिया कवि, रचनाकार लोग मूंग दले में लागल बा । अइसन कुल्हि लोगन के बात छोड़ दीं, तबहूँ आजुओ भोजपुरी साहित्य में समर्थ रचनाकारन आ साहित्यकारन के कमी नइखे । अइसन भोजपुरी माई के सपूत लोग भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के समृद्धि के शिखर तक ले जाए में लागल बाड़ें । इहे कारण बा कि आज भोजपुरी के एगो बोली मानल अतीत के गर्त में दब गइल बा । भोजपुरी भाषा अब क्षेत्रीय ना, राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय भाषा का रूप में आपन डंका डगडगा रहल बिया । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन 'भोजपुरी एगो सोगहग भाषा ह'

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा वैज्ञानिकन के कसउटी पर खरा उतर रहल बा ।

कवनो भाषा आ साहित्य के उत्थान, में पत्र–पत्रिका के बहुते योगदान रहेला । 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' का माध्यम से भोजपुरी के समर्थ साहित्यकार, कवि आ विचारक लोग बीतल लगभग तीन दशक से स्तुत्य प्रयास करत आ रहल बाड़ें । ई बात अलग बा कि नई पीढ़ी के एगो लमहर वर्ग सिनेमा आदि से अच्छाई ग्रहण करे का जगहा विकृत आ अपसंस्कृति के प्रतीक मनोरंजन का ओर आकर्षित हो रहल बा । आज सद्विचार परोसे वाला साहित्यकार आ विचारक लोगन का जगहा कुपथ–कुपथ रथ दउरावे वाला पथ निर्देशक बन रहल बा आ वोह लोगन द्वारा दिहल जा रहल सामग्री जहर के काम कर रहल बा । भोजपुरी एगो जनभाषा बिया । एह से समय आ गइल बा जब भोजपुरी के विचारक, साहित्यकार, कवि लोग फेंटा कस के समाज के सही राह देखावे के सत्कार्य में लाग जाव । 'सम्मेलन पत्रिका' उनकर विचार के जन–जन तक पहुँचावे में संवाहक के काम करी ।

हीरा हेराइल जात बा

दुख के बात बा कि एने एक–एक कके भोजपुरी साहित्य के अनमोल हीरा हमनी के बीच से उठ रहल बाड़ें । पिछला बरिस के आखिरी समय में भोजपुरी साहित्य सेवी राजनारायण दीक्षित जी के लगले पत्नी–पति दूनू के निधन भ गइल । हमरा बीच से जानल–मानल कथाकार कवि बरमेश्वर सिंह जी चल दिहलीं । अभी साल के पहिले दिन बीतत–बीतत भोर में पौ फाटे के पहिलहीं 'सम्मेलन पत्रिका' के यशस्वी संपादक प्रो. ब्रजकिशोर हमनी के संग छोड़ दिहले । कुछे दिन बाद जानल–मानल सशक्त आलोचक डॉ. नामवर सिंह के निधन 19 फरवरी के भ गइल । लगले फरवरी के कवि विशेषकर व्यंग्य के रचनाकार कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' जी के निधन के समाचार मिलल। अबहीं आँखि के लोर सुखलो ना रहे, तबतक एगो आउर बज्रपात भइल आ 'पनिहारिन' के रचनाकार वयोवृद्ध भोजपुरी कवि अनिरूद्ध जी 7 मार्च के हमनीं के संग छोड़ के एह दुनिया से चल दिहलें । एही बीच भोजपुरी कवि रामजी पांडेय अकेला के भी निधन भ गइल । एह सब महान आत्मा के 'सम्मेलन पत्रिका' का ओर से अर्पित बा विनम्र श्रद्धांजलि !

–महामाया प्रसाद विनोद

www.bhojpurisahityangan.com

थाती

सारन के भोजपुरी : बोली से साहित्य तक

–प्रो0 हरिकिशोर पांडेय

भोजपुरी में अगर कहल जाय –''ऊ हमार हाथ धइलन'', त एकर अँगरेजी अनुवाद का होई ? अगर कहल जाय "He caught my hand", त व्याकरण के कवनो गलती एह में ना मिली; बाकिर अनुवाद शुद्ध ना होई शुद्ध होई। शुद्ध होई "He caught me by the hand" । अगर पूछल जाय कि काहे, त जवाब होई कि ईहे मुहावरा ह अंगरेजी बोलेवाला लोग के । मुहावरा माने जे मुँहे लाग गइल होय । संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण कवनो भाषा के देह ह, कारक आ क्रियापद ओकर करेज ह आ मुहावरा ओकर आत्मा । दूगो आदमी अइसन हो सकेला जे नाक–नकशा, कपड़ा–लत्ता, चाल–ढाल, आवाज में अइसन मिलत होय कि चीन्हल मुश्किल हो जाय । तबहूँ ई त मानले जाई कि दूनों अलग–अलग आदमी बा । ई अलगाव के जे पहचान बा, उहे ओकरा के व्यक्ति (Indivisual) बनावत बा । अइसहीं दूगो भाषा मिलत–जुलत हो सकेले, मगर ओकनी के अलग व्यक्तित्व के पता लागेला– कारक, क्रियापद आ मुहावरा से ।

www.bhojpurisahityangan.com

सारन के भोजपुरी दोसरा जिलन का भोजपुरी से अलग कइसे होई ? भोजपुरी त एगो विशाल क्षेत्र के भाषा ह । उच्चारण–भेद भलहीं होई; मगर ई त सारन का भीतरो बा, बाहर के कवन बात बा ? कहाउते बा– "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी ।" एह हिसाब से सारन जिला के खास–खास इलाका में बॉट के उच्चारण के फर्क देखल जा सकत बा । नीचे हम अइसहीं वर्गीकरण कइले बानीं । बाकिर ईहॉ एगो गलती से सतर्क रहे के पड़ी । भाषा के भौगोलिक वर्गीकरण में दोष होला । भाषा भूगोल ना ह, ई संस्कृति ह; आ संस्कृति भूगोल के फान जाले । हम भाषा के उच्चारण में फर्क के संगीत का शब्द से व्यक्त कइल अधिका ठीक मानत बानी । लय में बन्हाइल स्वरन के इकाई ना लउके । अगर स्वरूप के छटका के चीन्हे लागे, त लय खतम हो जाई । बात चित्रकला के शब्दावली में भी कहल जा सकेला । चित्र में रंग के जे धूप–छॉही अँख–मुदौवल होला ऊ अलग क के ना देखल जा सके । अगर पीअर का ओर से चलेब त अइसन पता ना चली कि आसमानी ओमें कहाँ से घुसल बा । मतलब ई कि रउरा लाइन खींच के ई ना कह सकीं कि कवना के सीवाना कहाँ बा । ईहे बात भाषा का साथे भी लागू बा । एह से क्षेत्रीय वर्गीकरण मोटा–मोटी होई ।

छपरा के अगर केन्द्र बना के देखल जाव त पता चली कि छपरा से पच्छिम धीरे–धीरे अकारान्त शब्दन के, ह्रस्व 'इ' में व्याहृति होत जात बा । अगर पूरुब बढ़त जाईं, त ई बात ना मिली । दोसर बात ई कि पच्छिम बढ़ला पर स्वर आ व्यंजन दूनों के उच्चारण अधिका पुरुब होत जाई, जबकि पुरुब का ओर बढ़ला पर कोमल होत जाई । सारने में पच्छिम तरफ के लोग 'घोड़ा' कही, बाकिर छपरा से उत्तर आ पुरुब 'घोरा' मिले लागी । एकमा के लोग कहीं 'गइल' त मैरवां के कही 'गइलि' आ गुल्टेनगंज बढ़ जाईं तब 'गएल' । एह हिसाब से सारन के भोजपुरी के अलगाव समुझल जा सकेला । नीचे एह फर्क के खाना बना के बतावे के कोशिश कइल बा, बाकिर हम फेर इयाद दिया देबे के चाहत बानीं कि ई वर्गीकरण भौगोलिक भइला का वजह से भोजपुरी के धूप–छॉही असलियत के झलका ना सके । तबहुओं एक ठो मोटा–मोटी अन्दाजा त लागिये जा सकत बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

माँझी एकमा सिसवन, दुरौंधा पचरुखी, सिवान	सिवान, भैरवां, जीरादेई, गुठनी, मोरे, कटेया	बनियापुर, ढोढ़स्थान, बसंतपुर,	खैरा, मढोरा, तरैयाँ, मशरक राजापट्टी, अमनौर	परसा, गुल्टेनगंज दिघवारा नयागाँव
छोडके / छाड के	छाडि के / छोड छोड के	छोर के	छोर के	छोरके
छोर / छीन लेहलस	छोर / छीन लेहलसि	छनी लहलस	छीन लेलक	छीन लेलक
दुके खइलस	दुके खइलसि	केदु खइलस	केदु खइलक	केदु खयलक, खाइलक
बा, बाटे	बा, बावे	बा, बाटे, बावे	बा, बाटे	बा, हई, हइक, हय
खाईले,	खाईले / खाईला	खाईले	खाईले	खाईले, खाईला
दुकवना खाती	दुकेवना खानी	कवना बु खानी	कवना दु गई / गति	कवना दु लेखा / गई
एह खातिर	एहि खातिर / खतिरा	एह खातिर	एह खातिर लेख गनी	एह खातिर सुखे
ना भइल	ना भइलि / ना भइलि	ना भइल	ना भइल / भएल	ने भएल / भइल
बबुनी बबी, बुच्ची	बबुनी बबी, बुच्ची	बबुनी, बबुई	बबुई बबुनी	न भएल (सोनपुर)
कॉय दे कइलस	काँइदे कइलसि	कॉयदे कइलस	कॉयदे कइलक / खसे	बबुई–बबु
खइले, खइलिस	खइल, खइलिसि	खाले । खइलिस	खइले	कायदे । देनीसे कइलक
बलिस्ता, तकिया	बलिस्ता, तकिया	तकिया, बलिस्ता	तकिया / बलिस्ता	कयलक
	सिरहानी	रउरा / रउआलेखा	रउआ / लेखा रउरा	खइले / खयले
रउआ खानी	रउरी खानी रउरा	खाँ लेखा / खाँखानी		तकिया / बलिस्ता
रउरा खानी	खानी			रउआ / लेखा / रउरा
खँखार	खाँखार / खँखार			खँखार
रे हे / रे हो	खेंखार / खँखा	खँखार	खँखार	रेहे, एहे
थरिया में / थारी में	रेवे	रेवे, ऐहे	रेहे एहे	थरिया में
नीकहा / भीड़ रहे	थरिय में / थरिया में	थरिया में	थरिया में	वीमन भीर रहे / रइ
नीमन	नीकहाभीडि रहे	नीमन भीर रहे	नीमन भीर रहे	लक । रहलक
हम जानी	हम जानीं / जाइला	हम जानी	हम जाबीं / जाईले	हम जाली / जाईले जईला

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य के भाषाः– शुरू में भोजपुरी गद्य के लिपि कयथी रहल । ई चिट्ठी–पत्री के भाषा रहल । संत–साहित्य में भोजपुरी के खूबे प्रयोग भइल । संत–साहित्य के विषय धार्मिक–आध्यात्मिक अनुभूति रहल । चूँकि भोजपुरी के शब्द ग्रामीन जीवन, खेती–बाड़ी, गाछ–बिरीक्ष आ हिन्दू संस्कारन (बियाह–जनेव–श्राद्ध) तक सीमित रहल, एह से संतकाव्य के उपमा, बिम्ब,, प्रतीक सब एही जीवन से लेहल गइल । कबीर के 'इंगला–पिंगला'' के 'ताना–भरनी'' अहमदाबादी सूती मिल ना ह, गॉव के जोलहा के हाथ के हा ।'' ''केस जरे जस घासा'' आ 'उठो' रे सखी मोरी माँग सँवारो'' चाहे ''ता घर दुलहिन सूतल हो ।'' एह काव्य के भाषिक उपादान के सबूत बा । ई बात माने के पड़ी कि बहुते पहिले संतकाव्य के बड़हन हिस्सा भोजपुरी में बा, तबहूँ इहलौकिक साहित्य के परम्परा एमे ना रहल । संत–साहित्य आध्यात्मिक अनिवार्यता भले होखे, साहित्य अनिवर्यता ना रहे । इहे वजह बा कि सामाजिक अनिवार्यता पूरा करे खातिर संस्कृत, फारसी, उर्दू, अंगरेजी का बाद हिन्दी आ गइल । कारण भइल कि भोजपुरी का पहिलहीं लिखे–पढ़े के भाषा हिन्दी बन चुकल रहे ।

बहुत बाद में चलके आंचलिकता के जब उफान आइल त हिन्दी में लिखे–पढ़े वाला भोजपुरिया विद्वान लोग एह ओर झुकल । एह समय जे गद्य लिखाये के शुरू भइल, ओकर रूप का रहे ? महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जे आजमगढ़ में जन्म लेके भी सारन के आपन साधना भूमि बनवलन । उनका एगो लेख 'वानभट्ट आरो हराव राजा के भेंट' से बानगी लेके देखल जाव– 'वानभट्ट संसकीरत भाषा के बड़ा सरनामी कवि हवें । उनके एतना बड़ा गद्य में लिखेवाला कवि संसकीरीत में भी हमरा देश के दूसर भाखन में दूसर कवनो ना भइलें । उ भोजपुरिया मातारी भाषा के बोलवइया रहलन.....।' वाक्य रचना एकदम भोजपुरी बा । बाकिर एक चीज पर ध्यान खास करके जाता । राहुल जी संयुक्त अक्षरन के तूड़ के सीधा कर देले बाड़न (संस्कीरत, गद्य मातारी भाखा) । चूँकि ओह घड़ी के भोजपुरी के कल्पित पाठक अशिक्षित रहे, एह से राहुल जी तत्सम शब्दन के तूड़ के ठेठ बनावे के चहलन । ओह घड़ी भोजपुरी के ईहे पहचान रहे । ईहे वजह बा कि शुरू के भोजपुरी में सरलीकरण आ ठेठपन के छाप बा । आजहूँ भोजपुरी के स्वरूप पर लेखक लोग के एगो दल एही पर अड़ल बाटे । अगर कलात्मक अनिवार्यता ना होय, त अइसन अतिवादी दुराग्रह से भाषा के रूप में भोजपुरी के विकास ना होई, अब जब कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बा, भोजपुरी का भी कॉलेज–विश्वविद्यालय में जगह मिल रहल बा । जे हिन्दी में तत्सम शब्द

www.bhojpurisahityangan.com

शुद्ध बोल रहल बा, ओकरा अशुद्ध बोल के रियाज में पिछकुरिये चलला में कवन चलाकी बा ? कतहीं इनार भेंटी । जाई तब ?" यो धुवानी..... वाला हाल हो जाई । कहे के मतलब ई बा कि साहित्य के भाषा अगर संस्कार के भाषा होई त खुदे ऊहो संस्कार वालहोत जाइ तत्सम के तद्भव भा देशज रूप भोजपुरी में खास अर्थ बना लेले होखे, तब त कबहीं ना बदले के चाहीं । हम पहिलहीं कह चुकल बानीं कि भाषा के पहचान ओकर क्रियापद, कारक आ मुहावरा ह । काव्यात्मता के लिहाज से जतना तूड़–फाड़ कइल बने करीं, बाकिर अनेरे नां ।

जब भोजपुरी में साहित्य–रचना के होड़ भइल त ढेर लोग हहुआ के पड़ गइल । मगर कुछ लेखक लोग का गलतफहमी भी होखे लागल । ऊ लोग बूझस जे अंगरेजी भा हिन्दी वाक्य–रचना के भोजपुरियावे खातिर कवनो झमेला नइखे । उ लोग बूझल जे खाली हिन्दी क्रियापद का जगहा भोजपुरी क्रियापद साटत जायब आ बिना हरे–फिटकिरी चट देना भोजपुरी लाल बुझक्कड़ हो जायब । अइसन लोग के का कहल जाव । ईहे लोग भाषा के आपन चिन्हारी (व्यक्तित्व) मेटकावेला । बाकिर ईहो कइसे कहीं ? हिन्दीवाला लोग में भी कुछ जना अंगरेजी मुहावरा बा वाक्य–रचना ले के हिन्दी में फिट कइबे कइलन । शुरू में अच्छा ना लागल, मन हरकल, बाकिर अब तब "दुख के बादल छा गइल बा । "मैं अब जाना चाहूँगा ।" हिन्दियो का मुँहे लागिये गइल बा । समय बीतत गइल, आ अब ज्ञान–विज्ञान के निबंधो भोजपुरी में लिखा रहल बा, त हिन्दी–संस्कृत–अंगरेजी शब्दन के भी पचावहीं के पड़ी ।

पन्द्रह बरिस में भोजपुरी में कविता–कहानी–उपन्यास के बगइचा खूब मोजराइल आ फर के लदर गइल । कहीं–कहीं मधुवा लागल, बाकिर कवनो खास हरज ना भइल; गृहस्थ आ कलाकार घटा–घुटी के अनेसा करीं त उपराजी सिरजी का ? भोजपुरी भी अब सुन्दर साहित्य के भाषा हो चुकल बा । भोजपुरी अपना धरती के ओज, ओकर बलिदानी पौरुष, राष्ट्र–प्रेम, निष्कपट स्वभाव अउर मयार मन के महाकाव्य लिख चुकल बा । श्री हरेन्द्रदेव नारायण का 'कुँवर सिंह' में, सुन्दर साहित्य के भाषा से हमार मतलब ना त तत्सम शब्दन के बोझा ढोवला के बा ना नया बिम्बन–अलंकार के गोदना गोदवला के । हमार ईहे मतलब बा कि भोजपुरी वाक्य–रचना अपना ठेठपन में भी अर्थ का हिसाब से बहुआयामी हो गइल बा । राग–विराग, ऊहापोह तथ्य प्रतीक, हास्य–व्यंग्य के संस्लेष ई अपना शब्द योजना में दे सके में समर्थ हो गइल बा । थोड़े में कमहीं त, ईलियट का

www.bhojpurisahityangan.com

मुताबिक, एकरा में भातादाम्य (Emotional equiralent) देवे के ताकत आ गइल बा । कुछ बानगी देखके बूझ लियाव–

पांडेय चन्द्रविनोद के कहानी "चवन्नी" के रमललवा पियरिया का रूप पर रीझ के ओकरा के लेके कलकत्ता भाग गइल । ओकर बियही परबतिया सती लेखा ओकर असरा देखत दुख कटलस । एक दिन ओकर भतीजा आइल, ओकरा फूफू के दुःख ना सहाइल । ऊ परबतिया के कलकत्ता लिया चलल । परबतिया गाड़ी का आसरा में प्लेटफार्म पर बइठल बिया । उतने में बरबजिया गाड़ी आइल । ओमें पियरिया बनारसी साड़ी में बनल बइठल लउकल; मगर तुरन्ते ऊ गाड़ी खुल गइल । परबतिया भतीजा से कहल बिया –'देख ना बबुआ, ऊ त गड़िया बड़ा तेज बीया । छने भर में कहाँ निकल गइल ।" गाड़ी पियरिया के प्रतीक हो गइल ब ा । ओकरा तेजी में आ "कहाँ से कहाँ निकल गइला' में छिनारपन के व्यंग भी बा आ सती मेहरारू के अथाह दुःख भी ।

xx xx xx

मंदिर के कलसा चोरी हो गइल त कवि कहत बा–

"ठाकुर जी
कोठरी में बन्द बानी !
डर बा
केहू आँख ना निकाल लेव ।

xx xx xx

"दिनवाँ त पातर हो गइल
प्यार के नोनी झरे लागल !

("बाकिर" –शारदानन्द प्रसाद)

xx xx xx

केरा के पतई अस चित्ती–चित्ती फाट
के फड़–फड़ा रहल बा समय । ("ई हरनाकुश मन"–पाण्डेय सुरेन्द्र)

xx xx xx

पाण्डेय कपिल के उपन्यास "फुलसुंघी" में भोजपुरी गद्य फूट के जवान हो गइल बा ।

(सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तेरहवाँ अध्विेशन 1981 के स्मारिका 'इआद' से सामार)

–पूर्व प्राचार्य, जगदम महाविद्यालय, छपरा (सारण)

www.bhojpurisahityangan.com

आलोचना के शिखर पुरुष : डॉ. नामवर सिंह

नामवर । साँचहूँ एगो बड़ नाँव । हिन्दी साहित्य में रचनात्मकता का संगे एगो सशक्त आलोचक रहीं डॉ. नामवर सिंह जी । इनकर जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के एगो छोटहन भोजपुरिया गाँव जीयनपुर में 28 जुलाई 1927 के भइल रहे । इनकर बाबूजी गाँव के नियरे एगो प्राइमरी स्कूल में शिक्षक रहनीं । उनके संगे बालक नामवर आपन पढ़ाई के 'रा–म–ग–ति' शुरू कइलें । लड़िकपने से पढ़े में तेज रहलें । इनकर अधिका तेजी एक बेर इनका खातिर अभिशाप बन गइल । मिडिल के परीक्षा में छत्रपति शिवाजी पर एगो सवाल इतिहास मे आइल रहे । ओह सवाल के जवाब लिखते–लिखते इहाँ का पन्ना के पन्ना भरे लगलीं । एही में परीक्षा के समय खतम भ गइल आ दोसर सवालन के जवाब ना लिख सकलें । परीक्षा में फेल भ गइलें । बाद में आपन गलती के पता चलल आ अगिला साल फर्स्ट डिवीजन से पास कइलें । आगे के पढ़ाई यू.पी. कॉलेज में भइल ।

स्वतंत्रता संग्राम में 1942 के अगस्त क्रांति में छात्र नामवर सक्रिय भाग लेले रहलें । एकरा बादो 1945 में फर्स्ट डिवीजन में हाईस्कूल पास कइलें । धीरे–धीरे इनकर संपर्क आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से भइल । प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़लें । काशी–हिन्दू विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कॉलर बनलें । राजनीति में इनकर संबंध कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ल । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एगो लोकप्रिय अध्यापक के रूप में इनकर नाँव रहे । चन्दौली क्षेत्र के रहे वाला रहलें, एह से इनका इच्छा के खिलाफ पार्टी के आदेश से 1959 में 'चकिया चन्हौली' क्षेत्र से लोकसभा के चुनाव में उम्मीदवार बने के पड़ल । नतीजा उनका मालूम रहे । उहे भइल, चुनाव हार गइले । एतने ना, चुनाव लड़ला खातिर विश्वविद्यालय से निकाललो गइलें । बाद में जोध

www.bhojpurisahityangan.com

ापुर विश्वविद्यालय में गइलें, बाकिर उहँवो आपन विचारधारा के कारण टिक ना सकलें । कुछ दिन आगरा विश्वविद्यालय में रहलें । 1974 में जे. एन.यू. में भाषा केन्द्र के संस्थापक अध्यक्ष आ प्राध्यापक के रूप में नियुक्त भइलें । साहित्य जगत में इनकर पुस्तकन में 'बाकलम खुद' (निबंध–संग्रह), 'छायावाद', 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ', 'पृथ्वीराज रासो की भाषा', 'इतिहास और आलोचना', 'कविता के नये प्रतिमान', 'कहानी की कहानी' आदि किताब खूब लोकप्रिय भइल ।

डॉ. नामवर सिंह हिन्दी आलोचना के क्षेत्र मे चिंतन के प्रखरता, साफगोई का संगे बेबाक आलोचना, प्रगतिवादी समीक्षा प्रणाली आदि के लेल जानल जालें । इहाँ का आलोचना के क्रम में मुस्कुराहट का संगे प्रहार करीं आ केहू प्रहार करे त मुस्कुरा के ओकरा के स्वीकारतो रहलीं । 19 फरवरी, 2019 के एह महान आलोचक के महाप्रयाण भइल ।

कविवर अनिरूद्ध जी :

'पनिहारिन' के रचनाकार अनिरूद्ध जी के जनम सारण जिला के गंडक तीर पर डिही गाँव में 8 मार्च, 1928 के भइल रहे । बचपन में पिताजी के निधन के कारण राजेन्द्र कॉलेज, छपरा से इन्टरे तक के पढ़ाई पूरा कर सकलें । पढ़ाई का बाद बुनियादी विद्यालय में शिक्षक आ बाद में प्रधानाध्यापक भइलें । बचपने से कविता आ कला का ओर इनकर रुझान रहे । पढ़े के समय भोजपुरी के विख्यात कवि अर्जुन सिंह 'अशांत' का संगे रहत रहलें । इनकर कवित्व–प्रतिभा के कारण सतीश्वर सहाय वर्मा सतीश, उमाकांत वर्मा आदि के सानिध्य मिलल । आशीर्वाद मिलल प्राचार्य मनोरंजन, महेन्द्र शास्त्री, रामविचार पांडेय आदि के । पत्र–पत्रिकन में इनकर कविता प्रकाशित होखे लागल । जानल–मानल साहित्यकारन के छत्र–छाया में कविता का क्षेत्र में काफी ऊँचाई तक पहुँचले ।. प्रकृति के विविध रूपन के अपना कविता, में समेटले बिम्ब के सुन्दर प्रयोग इनकर कविता के विशेषता बा । 'पनिहारिन' कविता में भूँइएँ नाव चलावे के साहस श्रद्धेय अनिरूद्ध जी कइले रहलें :

लहर–लहर पुरवइया लहरे, लहँगा लहर भरेला ।
अँचरा के सब पाल उड़वली, भूँइए नाव चलेला ।।

'पनिहारिन', 'गीतन के गाँव में', 'कृष्ण बाल–लीला दोहावली' इनकर प्रकाशित पुस्तक बा, बाकिर 7 मार्च, 2019 के इनकर निधन भ गइल ।

–महामाया प्रसाद विनोद

www.bhojpurisahityangan.com

अध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित शख्सियत : प्रो. ब्रजकिशोर

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

एह अँगरेजी साल के समहुत भइला के दोसरके दिने माने 2 जनवरी, 2019 के प्रो. ब्रजकिशोर हमनीं का बीचे ना रहनीं । उनासी साल के उमिर में पटना के एगो बड़ अस्पताल में भोर के चार बजे उहाँ के आखिरी साँस लेले रहनीं ।

प्रो. ब्रजकिशोर ओइसे त यांत्रिक अभियंत्रण के सेवानिवृत्त प्राध्यापक रहनीं आ उहाँ के इंजीनियरी के विद्यार्थियन खातिर हिन्दी–अंग्रेजी में कई गो जरूरी पाठ्य–पुस्तको लिखले रहनीं, बाकिर उहाँके असली पहिचान–प्रतिष्ठा भोजपुरी के नामी कथाकार आउर संपादक का रूप में रहे । समकालीन भोजपुरी कहानी के विकास–जातरा में जवन चोटी के कथाकारन के खास अवदान रहल बा, ओह में प्रो. ब्रजकिशोर के नाँव खास तौर से रेघरिआवे जोग बा । चार दशक पहिले उहाँके कहानी–संग्रह 'धुआँ' प्रकाशित होके चरचा का केन्द्र में रहल, जवना के कहानी सामाजिक विसंगतियन–विद्रूपता के उकेरे में काफी हद ले कामयाब रहली स । समकालीन भोजपुरी कहानी के उपजाऊ जमीन तेयार करे का गरज से उहाँ के अस्सी का दशक में लमहर समय ले कथा–केन्द्रित यादगार पत्रिका 'भोजपुरी कथा–कहानी' के संपादन कइले रहनीं । भोजपुरी के श्रेष्ठ कहानियन के 'सेसर कहानी भोजपुरी के' शीर्षक से

www.bhojpurisahityangan.com

संकलित–संपादित कके उहाँके इतिहास रचले रहनीं, जवना में आचार्य शिवपूजन सहाय के 'कुंदन सिंह केसरबाई', रामेश्वर सिंह काश्यप के 'मछरी' समेत एकावन गो प्रतिनिधि कथाकारन के चुनिन्दा कहानी मौजूद बाड़ी स । ब्रजकिशोर जी के पहिचान प्रगतिशील चेतना के प्रतिष्ठित कथाकार का रूप में रहल बा आ 'धुआँ' के बाद उहाँ के चउदह कहानियन के संग्रह 'एक टुकी अन्हरिया' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे, जवना में संघर्षशील जिनिगी के ऊबड़–खाबड़, बाकिर विश्वसनीय जथारथ के मरम छूवेवाला चित्र उकेरल गइल रहलन स ।

जब बेरि–बेरि ई सवाल उठावल जाए लागल कि आम अदिमी के सामाजिक सरोकार–जद्दोजहद के जुझारू कहानियन के सिरिजना के बावजूद सामाजिक बदलाव आउर आस–बिसवास के कवनो किरिन फूटत लउकत काहें नइखे, त प्रो. ब्रजकिशोर एकरा मूल ओजह के पड़ताल करत लिखले रहनीं– 'कथाकार का चारू ओर जवन जिनगी आ वातावरन के बसतर लपेटाइल बा, ओमें ऊ बड़ा तकलीफ महसूस करता । आदमी का मन में मानवीय मूल्यन के मोल घटत चल जाता, काहेंकि ओकर पूरा व्यक्तित्व राजनीति का जाँता में पिसाके चूर हो रहल बा । हर ओर व्यापल अव्यवस्था का ओजह से बिखराव के प्रवृत्ति बढ़ल जाता । कतहीं बिसवास आ असरा के फूल गमकत नइखे लउकत । गरीबी, घुटन आ तनाव से आदमी के दम धुआँ रहल बा– ना त साफ धनकते बा आ ना बुताते बा । एगो बदलाव के स्थिति आ मनःस्थिति जे बा, ऊ सुनुगता । ओद लकड़ी जब सुनुगेला, त धुआँ के अम्बार लागि जाला । समाज आ व्यक्ति– दूनों कवनो वर्ग के होखे–गरीब, धनिक, मजूर–सभत्तर एगो अइसने बेचैनी बा, आकुलता आ धुंध बा । अतना कूहा छवले बा कि राह नइखे सूझत । समूचा समाज आ राष्ट्र एह धुआँ भरल वातावरन में घुट रहल बा । एह घुटन आ बदलाव का तड़प के चिन्हासी–भर महसूस करे का व्यग्रता में सउनाइल लेखक के मन एही धुआँ के भोग रहल बा । पूरा सामाजिक–राजनीतिक चेतना के ई धुआँ छापि लेले बा, जवना का ओजह से ना संघर्ष के जुझारू तैयारी होता आ नां बदलाव के स्वागत ।'

हालाँकि प्रो. ब्रजकिशोर जी मूलतः कथाकार रहनीं, बाकिर उहाँके एगो संवेदनशील कवियो रहनीं आ जवना घरी उहाँ के दरजा छव के विद्यार्थी रहनीं, तबे 'योगी' (पटना) में छपल उन्हुका कविता पर

www.bhojpurisahityangan.com

बाबा नागार्जुन आ संपादक ब्रजशंकर वर्मा उन्हुकर पीठ ठोकले रहलन । आगा चलिके जब ऊ लोकभाषा भोजपुरी का प्रति समार्पित हो गइलन, त उन्हुकर समकालीन भोजपुरी कविता–संग्रह 'जोत कुहासा के' खासा लोकप्रिय भइल रहे । दोसरको संग्रह 'बूँद भर सावन' में संवेदना के तरलता साफ–साफ देखल–महसूसल जा सकेला । परुए साल 2018 में छपल अपना संक्षिप्त आत्मकथा 'बाँस तर का घर' में उहाँ के अपना जिनिगी के जद्दोजहद के बानगी पेश कइले बानीं । ओह में उहाँ के खुलासा कइले बानीं कि जनम के बाद बहुत दिन ले उहाँके बानी मौन रहे आ एगो दुर्घटना में आगी के लपट का चपेट में अइला के दौरान चीख के रूप मे ऊ मुखरित भइल रहे । अध्यात्म उहाँके विरासत में मिलल रहे आ अपना गाँव में उहाँके दुनियाराम बाबा के आलीशान मन्दिर बनववले रहनीं । देवराहा बाबा के उहाँके परम शिष्य रहनीं आ बाबा आउर उन्हुका चमत्कार पर उहाँ के कईगो किताब लिखले रहनीं । आध्यात्मिक पत्रिका 'योगिराज' के संपादनो उहाँ के लमहर समय ले कइले रहनीं । एह तरी, अध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित व्यक्तित्व रहे प्रो. ब्रजकिशोर के ।

हमरा नियर अकिंचन के पिछिला चालीस साल से उहाँके आत्मीय नेह–छोह मिलत आवत रहे । जब हम पहिला हाली पटना अइलीं, त सबसे पहिले दूगो साहित्यकारन में भेंट कइले रहलीं । एगो रहलन 'प्रगतिशील समाज' के संपादक प्रो. श्याम नंदन शास्त्री 'हंसराज', जे हमरा हिन्दी लघुकथन पर केन्द्रित पत्रिका के विशेषांक निकालिके, फेरु अपना संदीप प्रकाशन से 'भविष्य का वर्तमान' शीर्षक हमार लघुकथा–संग्रह छपले रहलन । दोसरका अग्रज रहलन प्रो. ब्रजकिशोर, जे 'भोजपुरी कथा–कहानी' में हमार सोगहग उपन्यास 'दरद के डहर' छपला का बाद भोजपुरी साहित्य संस्थान से ओकर पुस्तकाकार प्रकाशन कइलन । प्रयोगधर्मिता त उहाँ में कूटि–कूटि के भरल रहे । जवना घरी भोजपुरी में लघुकथा विधा जोर पकड़ल शुरू कइले रहे, उहाँके हमरा सँगे विमर्श कइनीं कि काहें ना भोजपुरी के गिनल–चुनल एक दरजन लघुकथाकारन के पाँच दरजन लघुकथा चुनिके, हरेक लघुकथाकार पर मूल्यांकनपरक टिप्पणी का साथे एगो संकलन में छापल जाउ ? हमनीं दूनों के संपादकत्व में ऊ किताब 'टुकी–टुकी जिनगी' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे, जेकर लोकार्पण करत रेणुकूट अधिवेशन में

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. विद्यानिवास मिश्रजी भूरि–भूरि तारीफ कइले रहनीं । ओकरा बादे जाके 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के लघुकथा विशेषांक निकाले के योजना बनल रहे । नवहिन के हरदम अभिप्रेरित करत रहल उहाँके सुभाव रहे । उहें के प्रेरना से उत्साहित होके स्व. पशुपतिनाथ सिंह भोजपुरी आन्दोलन के धार तेज करे खातिर 'भोजपुरी कलम' के शुरुआत कइले रहलन ।

सन् 1970 में जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल, त ओमें आचार्य पाण्डेय कपिल, भैरवनाथ पाण्डेय वगैरह का सँगे प्रो. ब्रजकिशोरोजी के रचनात्मक भूमिका रहे । उहाँ के लमहर समय ले महामंत्री रहनीं आ आगा चलिके अध्यक्षो के दायित्व सम्हरनीं । सन् 2001 में जब पाण्डेय कपिल जी सम्मेलन के कार्यालय उहाँ के आवास इन्द्रपुरी से हटाके कतहीं अउर ले जाए के निहोरा कइनीं, त प्रो. ब्रजकिशोर जी अपना आवास में कार्यालय राखे के अनुग्रह कइले रहनीं । उहाँके 2001 से 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के अपना आखिरी साँस ले ना खाली स्तरीय संपादन कइनीं, बलुक कबीर, गोरख पाण्डेय, भोजपुरी के सइगो विभूतियन, राजकुमार शुक्ल, भोजपुरी सिनेमा वगैरह सर्वाधिक जरूरी विषयन पर यादगार विशेषांको प्रकाशित कइले रहनीं । ताजिनिगी उहाँके किछु–ना–किछु नया, बेहतर आ रचनात्मक करेके सोच राखत रहनीं । जिनिगी में कईगो झंझावातो अइलन स, बाकिर सभकर सामना करत उहाँके आपन नजरिया हरदम सकारात्मक बनवले रखनीं ।

प्रो. ब्रजकिशोर जी के साहित्यिक विरासत के 'खोंता से बिछुड़ल पंछी' के लेखिका उहाँके अर्धांगिनी रूपश्रीजी, प्रकाशन पेशा से जुड़ल इंजीनियर पुत्र रंजन आ 'मन' के कवयित्री बेटी दीप्ति ओह रचनाशीलता के विरासत के सहेजि–सम्हारिके रखले बा लोग । जदी उहाँ के इयाद पर केन्द्रित स्मृति–ग्रंथ के प्रकाशन होखे आ उहाँ के सिरिजन–शीलता पर अगर मूल्यांकनपरक किताब छपे, त ई उहाँ के प्रति साँच आउर सार्थक सरधांजलि होई । हमार प्रणामांजलि !

– शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर, पोस्ट बॉक्स–115, पटना–800 001, दूरभाष– 0612–2214967, चलभाष– 9430600958

www.bhojpurisahityangan.com

अथ कटहर पुरान

—गंगा प्रसाद अरुण

जा हो निझाइल जवानी ! एह भरल बसंत के भोरहरिया में इयादो आवे के रहले त रामेटहल काका आ कपार पर चकरघिन्नी खात उनकर कटहर पुरान ! असल में अभी निनिआइले रहीं कि सुतले–सुतले सुरता पर चढ़ गइले भोजपुरी के अमर गायक खलीलजी अपना पूरा लय–सुर में भोलानाथ गहमरी जी के सरब सुखकर गीत –'प्रीत में ना धोखा देईं, प्यार में ना झाँसा, प्यार करीं अइसन जइसे कटहर के लासा' –प्रीत–परेम के एगो अजगुत बरनन । आ एह फागुन में के ना प्रीत–परेम के इयादे से बिखिया जाला ! अइसहूँ त कहल जाला 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे' आ 'बासियो कढ़ी फफा जाय फगुनहटा के आँच लगले' । फिर ई 'कटहर के लासा, केकरा के नहिं फाँसा ?'

अबहीं परेम–वरेम के परे धरीं, कटहर से हमार परेम खानदानिए ह । हमार बाबा रहलीं पूरा–पूरा कटहरिया । कतहूँ कवनो गाछ पर लेंढा लउकल ना कि 'गाछे कटहर, ओठे तेल' अइसन उनका मन पर चढ़ जाय कटहर । अइसे ऊ बड़ा गेआनी रहले आ हरमेसे कहत रहलें– 'कटहर ह केहू खातिर 'कष्टकर' त केहू खातिर 'कष्टहर' –बाबा खातिर त पूरा–पूरी 'कष्टहर', आ एह कटहर–प्रेम के कई–कई प्रेरक–पीड़क प्रसंग आइल हमरो जिनिगी में । गहमरी जी के ई गीत गवला–बजवला से त एकबेर हमरा पड़ोसिये से कहासुनी–तनातनी हो गइल –'का दो उनकर सेआन लइकी के देख के ई, उनका विचार में, फूहर गीत पर हमार साहित्यिक साथी लोग के गोल धुमगज्जर मचवले बा' । जाकी रही भावना जैसी ! छोड़ीं एह बात–बतंगड़ के –'ग्वाल बेचारा बिरहा टेरे, मँइस बइठ पगुराय' ।

www.bhojpurisahityangan.com

अब देखीं ना, हमरा सोचावट के अमावट पर लाल मिरचाई के झाल आ गइल । कहानी त शुरू भइल रामटहल काका से, कहाँ बीच में 'जिमि करुना मँह बीर रस, आइ गएउ हनुमान' अइसन टपक पड़ले गहमरी जी । रामटहल काका के सुरता पर चढले बरबस उनका बगान में तब विराजमान कटहर के ऊ फेड़ इयाद में दोल्ह मारे लागेला आ तब हमार रामटहल काका सुघर–निखर के 'रामकटहल' काका हो जालन । हिन्दी से भोजपुरी में आवत–आवत कटहल 'कटहर' हो जाला । ई कटहर 'वैष्णव' लोगन खातिर फगुआ के दिने माँस–मछरी–मुरगा से कम ना । ओह दिन उनका भनसा में कटहरे के लहार–बहार । पता ना कइसे, हाथ के अँगूठा एकर प्रतीक–पर्याय बन गइल –'अब का लेब, बाबाजी के कट (कटहर) !'

एह कटहर–प्रसंग में रामटहल काका के लँगोटिया इयार मुरली बाबू के इयाद कइसे ना आवे ? असल में काका के गाछ से कटहर के जतना मूअल लेंढ़ा गिरे, सब चुन–बचा–जोगा के राखल जाय, उदारतापूर्वक मुक्त–हस्त से बाँटे खातिर । कहल गइल बा –'उधिआइल सातू पितरन के' आ 'सूखल सीठी, पंडी जी के लीटी' । बूझ जाईं भाई साहेब कि कटहर के मूअल लेंढ़ा के उदार दानी रहलें काका । मजाल कि ऊ गाछ के साबुत कटहर दे देस केहू के ! घरहीं में रहबत ना होइत । एक बे बंदी–करफू के बेर सब्जी–भाजी के ना मिलला के चलते आ गइलन एक जाना दाँत चिअरले –'एगो कटहर मिल जाइत त.....।' ऊ का बोलतें, उनकर बड़के बेटा बोल गइल –'फलना परसाद, जानत नइख, सब कटहर पाके खातिर नूं छोड़ल जाला' –आ फलना परसाद के बोलती बंद । अइसे मालूम होत रहे एने–ओने से कि भर–भर बोरी कटहर पार्सल होला गाँवें, बस से चुप्पे चोरी । डिठार में त बस वाला का दो लदबे ना करेलन स कटहर ।

हँ, त भर झोरा मूअल लेंढ़ा एक बेर अपना लँगोटिया दोस्त मुरली बाबू के जबरदस्ती धरवलें –'ले जा मुरली, आज तोहरो चुहानी गमके ।' मुरली बाबू उछाहे घरे अइलें –'सुनत बाड़ू, रामटहल भाई ई कटहर दिहले ह । तनी परेम से बनइह एकरा के ।' मरल लेंढ़ा देखते मेहरारू के मन मउराइल –'एजी, ई कुल्हि त मरल–सरल बाड़े स, एकर तीयन–तरकारी के त तेलो–मसाला बरबादे होई ।' अब गरमइले तनी मुरली बाबू –'तोर बाप–दादा खइले बाड़न कबो कटहर ! रामटहल भाई जतना परेम से देले बाड़न, ओतने परेम से बनाव एकरा के ।' बेचारी अनबोलता धन का करस ! बनवली आ परोसली डबलाहे मुरली बाबू

www.bhojpurisahityangan.com

के । पहिला टूक मुँह में डालते मुरली बाबू झवान –'ई त अरघाते नइखे हो, ठीके कहत रहलू तू ।' उनकर गइयो ओह कटहरदम के सूँघिये के भाग गइल । तब से रामटहल भाई मुरली बाबू के नजर में 'हरामकटहल' गोसाईं हो गइलन ।

खैर, कटहर पाके के समय आ गइल– पाकल के भोज के जोगाड़ भइल –'पाड़ेजी, रउरा अपना घरे से पूआ पकवा ले आइब दस–पनरह आदमी खातिर । कटहर के कोआ हम ले आइब । भाँग रहबे करी । चाननी रात में पहाड़ी पर पिकनिक के चनन–मनन रही । मन के मूअल मुरली बाबू के माथे छोटहन तसली में कोआ के जिम्मेदारी । पाँड़ेजी के कठवत भर पूआ । सभे भंग के तरंग में गोताइल । एकक आदमी के हिस्सा में दुदुइयोगो कोआ ना । पाँड़े जी के पूअवे सम्हरलस ओह पिकनिक के । –'का मुरली भाई, अइसन बहार में, एह मधुर–मदिर बयार में आ ऊपर आसमान में खिलखिलात चाननी के लहार में कवनो गीत–गवनई ना होई ?' अब भला मुरली बाबू से अड़ाव ! अपना 'रामकटहल' के आदेश पर, पिहिंक उठले –'चान निकलल, चननिया निकलल, बाकिर नाहीं निकलल रे कटहरिया –हवा डोलल, बेयरिया डोलल, बाकिर नाहीं डोलल रे कटहरिया– हई निकलल, हऊ निकलल, बाकिर नाहीं निकलल रे कटहरिया– कटहरिया–कटहरिया' –भंग के तरंग में मुरली बाबू के दिल–दिमाग पर जइसे कटहरिया छोड़ के अउर कुछ रहले ना रहे । देर रात के ओह पिकनिक के सराहत–सरापत सभे अपना–अपना घरे । हँ, अतना त भुलाइये गइलीं कि पाकल कटहर के मुँगरी आ कोआ के बीया घरहीं रखा गइल रहे रामकटहल जी के, दू–चार साँझ तीयन–तरकारी के उबार होई ।

'हरि अनंत, हरिकथा अनंता' अइसन ई कटहरो पुरान अनंते रहित, बाकिर अइसन भइल ना । केहू सलाह दिहल रामकटहल काका के कि समय–समय पर कटहर के फेड़ के डेहुँगी–टहनी के जतने छेंउँड़ल जाय, ओह में ओतने भतिया–लेंढ़ा लागी । आ ऊ कके का जे जादे से जादे लाभ पावे के सुझाव बूझ ना पावे ! आदमी एह काम पर लगावल गइल आ गाछ के डाढ़े–डेहुँगी काटे, ओकर फुलुँगी–भथेला तक छेंवड़ा गइल । कटहर के गाँछ त अपने टुनुकाह, फिर कवनो गाँछ त पतइये से नू आपन भोजन बनावेला । जादे फरावे के लोभ में गछिये सुखा गइल आ एह अनन्त कटहर–पुरान के एगो दुखद अंत हो गइल । रामकटहल काका के जिनिगी भर एकर अफसोस रहल ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

निबंध

गया : पितरन के तृप्ति आउर मुक्ति के धार्मिक शहर

—डॉ0 सत्येन्द्र प्रसाद सिंह

देश में बिहार के 'गया', 'राजस्थान' के 'पुष्कर' आउर उत्तराखंड के ब्रह्मकपाली में श्राद्ध कइला के खास महिमा बा । इहवाँ पिंडदान कइला से पितरन के मुक्ति मिलेला । भारत के कोना–कोना में गया शहर पिंडदान खातिर जादे मशहूर बा । ई शहर सदियन से एगो नामी तिरिथ के जगह रहल बाटे । सतयुग में भी इ शहर एगो नीमन तिरिथ के जगहा रहे । गरुड़ पुराण के अनुसार, समूचे गया क्षेत्र पंचकोश माने 15 वर्ग किलोमीटर के घेरा में कवनो अइसन जगहा नइखे, जवन मोक्ष देवेवाला तिरिथ नइखे– 'गयायां नहि तत्स्थानं यत्र तीर्थं ना विद्यते ।' मानल जाला कि गया के तरफ चलला से एगो अश्वमेघ यज्ञ कइला के फल मिलेला । गरुड़ पुराण के अनुसार, गया पृथ्वी के सबसे बड़हन तिरिथ बा । सृष्टि के सभन तिरिथ के देव लोग गयाधाम में रोज आवेलन । गया सिर आउर फल्गु गया तिरिथ के खास जगहा बा–

पृथिव्यां यानि तीर्थानि ये समुद्राः सारांसि व
फल्गुतीर्थं गमिस्यन्ति वारमेकं दिनेदिने
पृथिव्यां च गया पुण्या गयायां च गयाशिरः
श्रेष्ठं तथा फल्गुतीर्थं तन्मुखं च सुरस्य हि ।

ब्रह्माजी लोगन के कल्याण खातिर फल्गु नदी के स्वर्ग से गया के धरती पर उतरले बानी । गया के जमीन एतना पाक बा कि एह धरती पर पैर रखते पित्तरन के मुक्ति मिल जाला । वायु पुराण में कहल

www.bhojpurisahityangan.com

गइल बा– 'नाम गोत्रं तु मंत्रश्चदत्तमंत्रं नयन्तितम्.... अपि योनि राते प्राप्तारतृप्तिः तान् अनुगच्छति.....।' एकर अर्थ भइल कि वैदिक तरीका से नाम आउर गोत्र के अनुसार देल गइल पिंड आउर जल–तर्पण पितरन के इहाँ पहुँच जाला । प्रेत बनल आत्मा के मुक्ति आउर तृप्ति एही शहर से होला । गया में श्राद्ध कइला से ब्रह्महत्या, सुरापान आउर सोना के चोरी समेत सभन पाप से मुक्ति मिल जाला–

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेय मूर्वमनागमम
पाप तत्संगजं सर्व गया श्रद्धादिनश्यति

पितरपख में सभ पितरन के गया में आगमन होला ई चाह के साथे कि उनकर संतान गया आई आउर श्राद्ध, तर्पण करके उनका के तृप्ति आउर मुक्ति दिलाई । श्राद्ध आउर तर्पण से पितर लोग परम धाम पावेलन । गयाधाम में अपना संतान के देखके पितर लोग खूब खुश होखेलन आउर सोचेलन कि संतान फल्गु के पानी छू के हमरा के जरूर कुछ दी–

गया प्राप्तं सुतं दृष्टवा पितृणामत्सवो भवेत्
पद्ययामपि जलं स्पष्टवा अस्मभ्यै किस दस्यति

हिन्दू शास्त्र में मानल गइल बा कि मरला के बाद जीवात्मा चंद्रलोक के तरफ जालन आउर ऊपर जाके पितृलोक में पहुँच जालन । मरला पर आत्मा के सही जगहा पहुँचा देबे खातिर श्राद्ध आउर पिंडदान कइल जाला । पितरपख में देवतालोग आउर पितरन के तर्पण कइला से वंशवृद्धि के साथे जन्मकुंडली के पितृदोष के निवारण होला । गरुड़ पुराण के अनुसार, पितरन के पूजा कइला से आयु, पुत्र, यश, कीर्ति, बल–वैभव, पशु, धन आदि के बढ़ंती होला । मार्कण्डेय पुराण के अनुसार श्राद्ध कइला से पितर लोग अपना संतान के दीर्घायु, संतान, धन, विद्या, सुख, स्वर्ग आउर मोक्ष के कामना करेलन । ब्रह्मपुराण के अनुसार, श्राद्ध कइला से कुल में कवनो आदमी के दुःख ना होला । देवस्मृति के अनुसार, श्राद्ध कइला से संतान निरोगी, दीर्घायु, लायक संतान वाला आउर धनिक होखेलन ।

तर्पण, कुश, जल आउर तिल से कइल जाला, जबकि श्राद्ध अन्न, मधु, तिल आउर गाय के घी से कइल जाला । पिंड चावल, खीर, जौ आउर खोवा से बनावल जाला । एकादशी में फल के पिंड चढ़ावल जाला । विष्णुपद, रुद्रपद आउर ब्रह्मपद वेदी पर खीर से बनल पिंड

www.bhojpurisahityangan.com

चढ़ावल जाला । सीताजी के पास बालू के पिंड चढ़ावल जाला । कौअन के झुंड उजर–उजर पिंड के मन अघा के खालन । पंडा आउर श्रद्धालु कौअन के पितरन के प्रतिनिधि मानेलन ।

गया के कण–कण में विष्णुजी समाइल बाड़न । भादो महीना के शुक्ल पक्ष के अनंत चतुर्दशी से लेके आसिन महीना के अमावस तक पितरपख मेला लागेला, जवना में विष्णुपद मंदिर में पिंडदानियन के खास भीड़ जमेला । पितरपख के पखवाड़ा में हिन्दू सनातन धर्म के लोग अपना पितरन के प्रेतयोनि से छुटकारा दिलावे खातिर विष्णुपद मंदिर से लेके प्रेतशिला पहाड़ आउर बोध गया के वेदियन पर पिंडदान करेलन । आसिन महीना के कृष्णपक्ष के दोसरका दिन पिंडदानी पंचतीर्थ श्राद्ध के मार्फत उत्तर मानस, कनखल, दक्षिणमानस, जिह्वालोल, आउर गदाधर वेदियन पर श्राद्धकर्म करेलन । पितरपख के पाँचवा दिन ब्रह्मदर्शन वेदी आउर कागबलि पर पिंडदान कइल जाला । आसिन महीना के कृष्णपक्ष के पंचमी से विष्णुपद मंदिर में त्रिपाक्षिक श्राद्ध पितरन के मोक्ष दिलावे खातिर कइल जाला । विष्णुपद मंदिर में कार्तिकपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्थाग्निपद, आध्वनीयाग्निपद आउर सूर्यपद सहित सोरह गो वेदियन पर पिंडदान कइल जाला ।

गया में एक दिन, तीन दिन आउर सतरह दिन के गयाश्राद्ध होला । एक दिन के गया श्राद्ध में फल्गु में स्नान के बाद विष्णुपद में पिंडदान आउर अक्षयवट में सुफल लेला के बाद पिंडदान कइल जाला । तीन दिन के गयाश्राद्ध में फल्गु में स्नान कइला के बाद तर्पण, दोसरका दिन ब्रह्मकुंड में तर्पण आउर श्राद्ध, प्रेतशिला, रामशिला आउर रामकुंड पर कर्मकांड आउर तीसरका दिन फल्गु में स्नान आउर तर्पण के बाद विष्णुपद वेदी, रुद्रपद वेदी आउर ब्रह्मपद वेदी पर पितरन के मोक्ष दिआवे खातिर कामना कइल जाला । सतरह दिन के गयाश्राद्ध में सतरहो दिन श्राद्धकर्म कइल जाला ।

एगो असुर गयासुर के नाम पर शहर के नाम गया पड़ल बा । ई शहर गयासुर के पवित्र देह पर बसल बा । गयासुर कोलाहल पहाड़ पर कठोर तपस्या कके भगवान विष्णुजी के खुश कके लोगन के कल्याण खातिर वरदान मंगलन कि जवन आदमी उनका देह के छू दी ऊ सीधे स्वर्ग चल जाई । विष्णुजी के वरदान से सुर–असुर, पापी, ऋषि, संत आदि गया के शरीर छू के बैकुठ चलि गइलन । एह वरदान

www.bhojpurisahityangan.com

से यमराज के व्यवस्था गडबड़ा गइल । यमराज ब्रह्माजी से कहलें कि गयासुर के ना रोकल जाई, त राउर बनावल व्यवस्था खतम हो जाई । गयासुर के असथिर करे खातिर ब्रह्माजी विष्णुजी के मदद से गयासुर के पाक देह पर देवतालोग के साथे महायज्ञ कइलें । यज्ञ खातिर गयासुर आपन शरीर दिहलन । यज्ञ के समय गयासुर के कँपकँपी रोके खातिर भगवान विष्णु के अपना शरीर पर रखल धरमशिला पर पैर रखे देलन आउर असथिर हो गइलन । गयासुर से खुश होके भगवान विष्णु वरदान माँगे के कहलन । गयासुर वरदान मँगले कि हमरा के पथल बना के इँहवें स्थापित कर दीं, सभ देवता लोगिन साथे रउआ एही पथल पर बसल रहीं आउर ई जगहा मरला के बाद कइल जाएवाली करम किरिया खातिर तिरिथ बन जाव । भगवान विष्णु वरदान दिहलें कि गया जहवाँ असथिर भइल बाड़न उहवाँ पितरन के श्राद्ध आउर तर्पण कइला पर पितरन के मुक्ति मिली । साथ ही, गयासुर भगवान से माँग कइलें कि हमरा रोज एगो मुंड आउर एगो पिंड जरूर चाहीं ना त हम फेर से उठ खड़ा हो जाइब । गया के श्मशान में रोज एगो मुरदा जरूर जरेला आउर सभन वेदियन में से कवनो एगो वेदी पर पिंडदान जरूर होला । विष्णुपद मंदिर का नियरे गयासिर वेदी बा जहवाँ पिंडदान कइल जाला । पुरनका गया कूप गयासुर के नाभि कहल जाला जहवाँ प्रेतबाधा से मुक्ति खातिर त्रिपिंडी श्राद्ध कइल जाला ।

1780 ई. में विष्णुपद मंदिर ईंटन के बनल रहे । बाकी इन्दौर के महारानी अहिल्याबाई होल्कर देश के चुनिंदा कारीगरन आउर शिल्पकारन के गया में जुटा के करिया पथल से विष्णुपद मंदिर के बनववली । मंदिर के भीतरा अष्टकोण कुंड में भगवान विष्णु के पैर चानी से मढ़ल बा । रानी अहिल्याबाई होल्कर गौड़ सारस्वत ब्राह्मण मूर्तिकारन के विष्णुपद मंदिर बनवावे खातिर राजस्थान के अलवर, भरतपुर, जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर आदि जगहन से लाके गया के टेकारी स्टेट से निहोरा कके गया के पत्थरकट्टी गाँव में बसववली । टेकारी महाराज पत्थर कट्टी से बथानी तक तीन सौ कलाकारन के बसे खातिर जमीन देलन आउर नियरा के सात गो करिया पहाड़ कलाकारन के सउँपलन । करिया पथल के काट तराश के कलाकार आलीशान विष्णुपद मंदिर खड़ा कइलन । विष्णुपद मंदिर के ऊँचा गुम्बद बनावे के योजना मूर्तिकारन के रहे, बाकिर रानी अहिल्याबाई

www.bhojpurisahityangan.com

होल्कर के स्वर्गवास भइला के चलते ई काम ना हो सकल । बाकी बालगोविन्द सेन नामके गयापाल माने गयवाल मंदिर के चोटी पर एक मन सोना के पाजा लगवा के मंदिर के खूबसूरती बढवले बाड़न ।

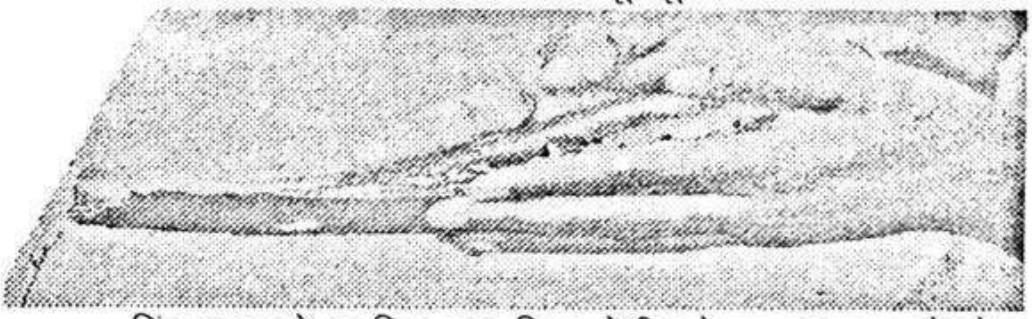

पिंडदान करे खातिर 360 दिव्य वेदी कोलाहल पहाड़ से लेक राजगृह तक पसरल रहे । बाकी समय के साथ ढेरो दिव्य वेदी काल के गाल में समा गइल । जवना में गया के इतिहास छिपल बा आउर अनगिनत आत्मा के तृप्ति सहेजल बा । कपिलधारा, ब्रह्मयोनि, तारक ब्रह्म सावित्री कुंड, सरस्वती सरोवर, गदालोल तालाब, धृतकुलपा, मधुकुलपा, पुंडरीकाक्ष वेदियन के पता अब नइखे । 'श्री गया माहात्मय कथा' में 54 गो वेदियन के नाम बा जवना में 45 पर पिंडदान आउर 9 पर तर्पण होला । अबहूँ जवना वेदियन पर पिंडदान होला ओकर नाम बा– फल्गु, जिह्वालोल, विष्णुचरण, विष्णुपद में सोरहो वेदी, प्रेतशिला, ब्रह्मकुंड, रामशिला, रामकुंड, सीताकुंड, काकबलि, उतरमानस, गया दिव्य, उदीची वेदी, कनखल, सूर्यकुंड, गदाधर वेदी, गयासिर, गया कूप, मुंडपिष्ठ, धौतपद, आदि गया, गोदावरी सरोवर, मंगलागौरी, वैतरणी सरोवर, ब्रह्मसरोवर, भीमगया, धर्मारण्य, बोधिवृत्त, अक्षयवट आदि ।

प्रेतशिला पहाड़ पर काली माई चाहे प्रेतभवानी के मंदिर बा । अकाल मृत्यु खातिर पिंडदान खाली प्रेतशीला में ही होला । एकरा के सीधे ब्रह्माजी के मंदिर मानल जाला । प्रेतशिला आत्मा के मुक्ति खातिर गेटवे बा । पिंडदानी प्रेतशिला पहाड़ पर घुमरी करत सतुआ उड़ावेलन, जवना से पितरन के प्रेतयोनि से मुक्ति मिलेला । एकरा तलहटी में पिंडदान छोड़े खातिर गोशाला बा । शास्त्र में लिखल बा कि पिंड बना के जल में छोड़ल जाई, चाहे गाय के खिआवल जाई । पूजा कइला के बाद गोशाला या तलहटी के ब्रह्मकुंड में पिंडदान दियाला । तर्पण के काम ब्रह्मकुंड में भी कइल जाला । प्रेतशिला के ब्रह्माजी के पैर मानल जाला । चरण के सामने भगवान विष्णु के प्रतिमा बा । इहँवे तीन भाग

www.bhojpurisahityangan.com

में फाटल शिला बा, जवना पर कर्ता, जौ के सतुआ आ आटा छींट के ओकर परिक्रमा करेलन ।

प्रेतशिला पहाड के साथे एगो रोचक कहानी जुड़ल बा । प्रेतशिला पहाड़ के नाम पहिले प्रेम प्रहाड़ रहे । इहवाँ ब्रह्माजी एगो यज्ञ कइले रहलन । दान में दूध के पोखरा आउर सोना के पहाड़ ब्रह्माजी गया के पंडन के देले रहीं । उहाँ के पंडन के मना कइले रहीं कि फेर केकरो से दान में कुछ मत मँगिहऽ । कुछ दिन बाद धर्मराज एगो भांरी यज्ञ कइलन । यज्ञ में धर्मराज पंडन के छपन तरह के बढ़िया भोजन करवलन । पंडन के दक्षिणा देवे लगलन, तब पंडन के इआद आइल आउर दक्षिणा लेवे से इनकार कइलन । धर्मराज सोच में पड़ गइलन कि अगर दक्षिणा पंडन के ना दिआई, तब यज्ञ सफल ना मानल जाई । चले के समय धर्मराज एह खातिर पंडन सभ के पान के साथे सोना के लौंग खाय खातिर दे दिहलीं । जइसे पंडन सभ पान चबवलें कि सोना के पहाड़ पथल में बदल गइल आउर दूध के पोखरा पानी के पोखरा बन गइल । पंडा लोग कलपत ब्रह्माजी के पास पहुँचलन आउर कहलन कि अनर्थ हो गइल बा । बहुते निहोरा कइला पर ब्रह्माजी पंडन के दाल रोटी चलावे खातिर उपाय निकललीं । उहाँ के वचन देहनीं कि प्रेतशिला पहाड़ पर जबले करता पंडन से पीठ ना ठोकवाई, तबले ओकर उद्धार ना होई । प्रेतशिला पर पंडन से आसीरवाद लेला के बाद ही पितर के प्रेतयोनि से मुक्ति मिली ।

ब्रह्मयोनि पहाड़ पर लोग ब्रह्मपिशांच के प्रकोप शांत करावे खातिर आवेला । धर्मारण्य वेदी पर त्रिपिंडी श्राद्ध कइल जाला । प्रेतबाधा से छुटकारा खातिर अष्टकमल आकार के कुआँ में नारियल डालल जाला । स्कंदपुराण के अनुसार, इहवाँ धर्मराज युधिष्ठिर महाभारत युद्ध में मारल गइल लोगन के आत्मा शांत करे खातिर पिंडदान कइलन । 'अग्नि पुराण' में मतंगव्यापी वेदी के महिमा के बखान बा । इहवाँ मतंग ऋषि कठोर तपस्या कइले रहस । मतंगव्यापी में पिंडदान के बाद मांतगणेश शिव पर पिंडदान के सामान चढ़ा के तृतीया के दिन समापन कइल जाला राम शिला पहाड़ी पर शंकर, पार्वती, श्रीराम आउर बजरंगबली के मंदिर बा । इहवाँ श्रीरामजी के चरण आउर रामशिला वेदी बा । एही जगहा पर श्रीराम जी अपना पितरन के पिंडदान कइलें रहीं । चबूतरा के ऊपर रामशिला मंदिर बा, जवना में सीताजी, रामजी

www.bhojpurisahityangan.com

आउर लक्ष्मण जी के मूर्ति लागल बा । मूर्ति के बायें श्री गणेश जी के बड़हन दीप्त मूर्ति बा । सबसे दाहिने स्फटिक के शिवलिंग बा ।

गया के तीर्थ पुरोहित गयापाल या गयवाल कहल जालन । ई ब्रह्मकल्पित ब्राह्मण लोग मूल रूप से गया के ही बाड़न । ब्रह्माजी गयापाल पुरोहितन के अपना कल्पना से गया खातिर गढ़ले बाड़न । ढेर दिन पहिले प्रेतपर्वत के बीहड़ राह में भूत–प्रेत तिरिथ यात्रियन के डरावत रहलन । ओह समय के बिहार के दुमका जिला आउर पश्चिम बंगाल के मालदह जिला के बीच धामिन कोहनाम पहाड़ी आउर ओकरा तलहटी के पीर धनुर्धरन के तिरिथ यात्रियन के बचावे खातिर लगावल गइल । एह खातिर वीर धनुर्धरन के एगो आदमी पर चार पैसा दिआत रहे । पिंडदानियन के सही सलामत गया ले आवे आउर गया से ले जाये में धामी धनुर्धरन के कामयाबी देखके धामी धर्नुधरन के गयापाल तिरिथ पुरोहित अपना आमदनी के ब्रह्मोत्तर–मालिकाना देवे के रसम शुरू कइलन । जब गया नगर बस गइल, तबो एकरा देख–रेख में धामी लोग लागल रहलन । समय के बीतते–बीतते गया के तीन गो पहाड़ियन प्रेतशिला, रामशिला आउर ब्रह्मयोनि वेदियन पर धामी पंडन के पिंडदान के अधिकार मिलल ।

गयवाल पंडा विष्णुपद मंदिर के पंडा बाड़न त धामी पंडा लोग विष्णु मूर्ति माने गया गजाधर नाथ के पंडा । उत्तर मानस वेदी के अधिकारी गयवाल पंडा बाड़न त शीतला मंदिर के अधिकारी धामी पंडा बाड़न । कागबलि, पिता महेश्वर आउर सूर्यमंदिर धामी पंडन के पास बा । गयापाल एह इलाका के जमींदार रहलन । गयवाल तिरिथ के पुरोहित्त लोग गया नगर के कला–कौशल के हिफाजत कइलन । पिंडदानियन के ढेर सारा दान से गयापाल तिरिथ पुरोहितन के बढ़ंती भइल आउर गयावाल समुदाय गया नगर में ढेर सारा मंदिर बनववलन । विष्णुपद मंदिर के पूजा अधिकारी रहला के चलते एह समुदाय के समाज में मान बढ़ल ।

बिहार के गया नगर में ईश्वर खुदे विराजमान बानीं । शायद एही से एह शहर के गयाजी के नाम श्रद्धा से मिलल । धन्य बा ई बिहार के धरती, जहवाँ दुनिया के लोग पिंडदान करे खातिर आवेलन आ पितरन के आत्मा के मुक्ति दियावेलन ।

–प्रभारी प्राचार्य, हरिराम महाविद्यालय, मैरवा, सिवान

www.bhojpurisahityangan.com

गीत किसान के

—डॉ. राजकुमार विष्णुपुरी

आवऽ भाई—बहिनी, खेत में कमाईं जा ।
दुख आ दलिद्दर देश के मेटाईं जा ।।
मेहनत के मोल का जानी
सूट—बूट—टाई जे लगाई
झूठ—साँच बोल—बाल
कोठा जे उठाई जा
छोड़ संग झूठ के, साँच संग आईं जा ।
आवऽ भाई बहिनी, खेत में कमाईं जा ।।
धरम के ना भाषा के
भेद—भाव जानीं जा
जात के कुजात के
बस आदमी हम मानीं जा
ऊँच—नीच के मिलि झगड़ा मेटाईं जा ।
आवऽ भाई—बहिनी, खेत में कमाईं जा ।।
मेहनत आपन धरम बा
धीरजे बस आस बा
पूरा होई सपनवा
इहे विश्वास बा
सोना जइसन फसल माटी में उगाईं जा ।
आवऽ भाई—बहिनी, खेत में कमाईं जा ।।

—गुलटेनगंज, सारण—841211

www.bhojpurisahityangan.com

दर्द बन के छा गइल

—रिपुंजय निशान्त

बीच पन्ना पर रहे जे
हाशिया पर आ गइल
दर्द बनके छा गइल ।

ले रहल करबट समय
सपना हिया के मथ रहल बा
लोग सब लागे अपरिचित
हर डगर, हर पथ विकल बा

हर समय सागर व्यथा के
ज्वार बन दहला गइल
दर्द बनके छा गइल ।

पड़ गइल विध्वंश के बा
नींव कुदरत कह रहल बा
बोझ अब विज्ञान के
सउँसे जगत ई सह रहल बा
नाश के डंका बजा
सब लोग के नचवा गइल
दर्द बन के छा गइल ।

अब मुड़ेरा पर बइठके
सोच में बा चतुर कागा
आग पर ही चल रहल बा
हर समय मानव अभागा
जड़ भइ छन ही में जीवन
श्वांस धोखा खा गइल
दर्द बन के छा गइल ।

राम राज चौक, दहियाँवा, छपरा

www.bhojpurisahityangan.com

व्यक्तित्व

साहित्य साधिका डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य

—विश्वनाथ शर्मा

जनपदीय चेतना के व्यापक आयाम प्रदान करे के संगे भोजपुरी भाषा के शिष्ट, परिष्कृत भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करे के एगो आग जवना व्यक्तित्व में धधकत रहे, वोह व्यक्तित्व के नॉव ह डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य । इहॉ का बचपने से प्रखर आ कुशाग्र बुद्धि के रहलीं। कवनो अवरोध इनका आपन राह से डिगा ना सके । इनका व्यक्तित्व में स्वाभाविक रूप से विनम्रता के भाव देखे के मिले । स्वाध्याय आ साहित्य के प्रति अभिरुचि इनका व्यक्तित्व में पहिलहीं से रहे, जवना प्रवृत्ति में विवाह का बाद अउरी–विस्तार मिलल । विवाहोपरान्त जवन परिवार में इनकर बिआह भइल, ऊ सोना में सुहागा के काम कइलस । इनकर जेठ डॉ. भोलानाथ तिवारी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भाषाविद् रहीं आ दिल्ली विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान के प्राध्यापक रहीं । एतने ना, ऊ अपना छात्र जीवन में आजादी के लड़ाई में 1942 के अगस्त क्रांति में सक्रिय भाग लिहला खातिर जेल तक भेजल गइल रहीं । एह राष्ट्रभक्त परिवार में इनका ज़िनगी के एगो नया आयाम मिलल ।

यद्यपि इनकर पति उत्तरप्रदेश में एगो उच्च प्रशासनिक पदाधिकारी रहीं, बाकिर इनको साहित्य में गहिर अभिरुचि रहे । उहॉका डॉ. शांडिल्य के सामाजिक–साहित्यक गतिविधियन में भरपूर सहयोग प्रदान कइनीं । पर्यटन के प्रति दूनो पति–पत्नी के विशेष आकर्षण रहे एही से ई लोग विश्व भ्रमण करेके क्रम में अमेरिका, कनाडा, इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्वीट्जरलैंड, मॉरिशस, जामिबया, जापान, थाईलैंड, फिलिपाइन्स, नेपाल, ताइवान आदि अनेक देशन के भ्रमण कइलन। इहॉं का भ्रमण का क्रम में वोह देशन के भाषा, साहित्य, संस्कृति आ इतिहास के गहराई से अध्ययन कइनीं ।

इनकर पिता एगो उच्च फौजी अधिकारी का रूप में पहिल विश्वयुद्ध में विश्व के अनेक देशन में गइल रहलें । अपना माई–बाप के इकलौती संतान राजेश्वरी के पालन–पोषन खूब लाड़–प्यार से भइल रहे । विवाह का बादो जवन परिवार मिलल ओह में सुख–सुविधा के कवनो कमी ना रहे । ससुराल में पति का संगे उत्तरप्रदेश के दर्जनो

www.bhojpurisahityangan.com

जनपद के सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक गतिविधि के नियरा से देखे के अवसर मिलल । मायके में स्कूली शिक्षा प्राप्त कइला का बाद पतियो से प्रोत्साहन मिलल आ इलाहाबाद से बी.ए., साहित्य रत्न आ संगीत में उच्च शिक्षा प्राप्त कइलीं । साहित्य साधना का संगे–संगे इहाँ का धर्म के प्रतियो अटूट निष्ठा रखलीं । नियमित पूजा–पाठ इनका जिनगी के एगो अभिन्न अंग रहे ।

हिन्दी–भोजपुरी में लगभग चालीस गो पुस्तक के रचना भा संपादन इनकर महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि कहल जा सकेला । साहित्य–साधना का संगे–संगे इनका में अभूतपूर्व सांगठनिको क्षमता पावल जाला । अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद् के संस्थापक महामंत्री, का संगे ओकर इहाँ का प्राण रहनी । इनका लेखन, व्याख्यान आ अध्ययन के सम्मान करत 1991 में उत्तरप्रदेश सरकार इनका राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित कइल । 1993 में राहुल जी के जन्म शताब्दी के अवसर पर तीन सौ पचास पृष्ठ के 'राहुल परिक्रमा' के पुस्तक के इहाँ का संपादन कइनीं, जवना में अनेक प्रमुख विद्वानन के निबंध–संग्रहीत बा । पौराणिक काल में गंडक के पर्याय का रूप में सदानीरा कहल जात रहे ओही के नाँव पर धर्म, संस्कृति, भाषा, लोकसाहित्य आ पर्यावरण आदि विषयन पर निबंधन के संग्रह 'सदानीरा' भोजपुरी साहित्य के एगो अनमोल उपलब्धि ह ।

डॉ. शांडिल्य के व्यक्तित्व में प्रखर बुद्धि, विनम्रता, उचित–अनुचित के पहचान के क्षमता, दायित्वबोध आ दृढ़ इच्छाशक्ति के पंचनद प्रवाहित होला । परोपकार से इनका सुखद अनुभूति होला । इनका आपन माटी से मोह, मातृभाषा भोजपुरी से नैसर्गिक ममता आ राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गर्व बा ।

भोजपुरी के प्रति इनका सम्पूर्ण समर्पण के प्रतिफल बा हिन्दी–भोजपुरी के वैचारिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक मासिक पत्रिका 'भोजपुरी लोक' के अपना बलबूता पर नियमित प्रकाशन आ आपन अथक परिश्रम से 'भोजपुरी लोक' के संपादन कहल जा सकेला कि हिन्दी खातिर द्विवेदी जी के 'सरस्वती' जवन काम कइलस, ओइसने काम भोजपुरी खातिर 'भोजपुरी लोक' रहल। इनकर विलक्षण संपादन कला से प्रभावित होके हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के साहित्य अकादमी आपन हिन्दी पत्रिका 'संकल्य' के अतिथि संपादक क रूप में इनका के सम्मानित कइलस । इनकर बहुमुखी प्रतिभा के कारण अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन बिहार 'उदयनारायण तिवारी पुरस्कार', अखिल भारतीय

www.bhojpurisahityangan.com

जनपदीय परिषद् के भोजपुरी गौरव, विद्यावाचस्पति, साहित्यश्री (लखनऊ विक्रमशिला विद्यापीठ से डि.लिट् के मानद उपाधि, राहुल पुरस्कार आ भारती संस्थान बस्ती से 'संपादकश्री' के सम्मान से इनका सम्मानित कइल गइल ।

डॉ. शांडिल्य के साहित्यिक जिनगी में कुछ विलक्षण कार्य सम्मिलित बा । एह दिशा में भोजपुरी लोक के 'कविता अंक' नवम दशक के काव्य पर विशेषांक के रूप में, शोध परक लेखन पर आधारित 'ग्रियर्सन अंक' शोधार्थियन खातिर अत्यन्त उपयोगी विशेषांक बा । भोजपुरी भाषा के भीष्म पितामह, निष्काम कर्मयोगी पं. गणेश चौबे के जन्म दिवस पर भोजपुरी लोक के 'गणेश चौबे विशेषांक' में उनका उत्प्रेरक जीवन के इति वृत्तात्मक झाँकी देखे के मिलेला । रेणुकूट में विद्यानिवास मिश्र जी के अध्यक्षता में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सफल आयोजन इनकर कर्मठता के प्रतीक बा । एही सम्मेलन में आदिकवि कबीर के जन्म दिवस के भोजपुरी दिवस के रूप में मनावे के प्रस्ताव पारित भइल । अन्ततः डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य के सरल, सात्विक आ कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व में कुछ अइसन आकर्षण बा कि बरबस सभे इनका कार्यक्रम में भरपूर सहयोग करेला । विगत पाँच दशक से इहाँ का भोजपुरी के सेवा में तन, मन, धन से लागल बानी । अनेक पुरस्कार आ अलंकरण के बीच उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रदत्त 'लोकभूषण' सम्मान सर्वाधिक महत्वपूर्ण बा । हिन्दी–भोजपुरी में लगभग चालीस पुस्तकन के रचनन में 'लोक संस्कृति : एगो झाँकी', 'सदानीरा', 'गूलर के फूल', 'भोजपुरी लोकोक्तियों एवं लोकगीतो में जनजीवन, 'भोजपुरी लोक गीतों में गाँधी चर्चा', 'भांषा, साहित्य एवं संस्कृति', 'चिंतन अनुचिन्तने, 'भोजपुरी लोकगीतों में गीति–तत्व', 'राष्ट्रभाषा हिन्दी–कल, आज और कल, त्रिथना', 'कविवर महेन्द्र मिश्र के गीत संसार', भारतीय पर्व एवं त्योहार', 'विश्व व्यापिनी भोजपुरी',, 'भोजपुरी के कबीर', 'नये–पुराने लोक रंग' प्रमुख बा ।

साँच पूछल जाव त लोकभूषण डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य सांस्कृतिक मूल्यन के संरक्षिका, सफल पत्रकार, संपादक, सशक्त आलोचक आ भोजपुरी के प्रति समर्पित साहित्य साधिका बाड़ी ।

–उपाध्यक्ष, सारण प्रमंडल भो.सा.स., रामसखी–रामबिहारी स्मृति पुस्तकालय भोजपुरी शोध संस्थान, नारायण नगर, पोस्ट गुरुकुल मेहिया, छपरा, (सारण)–841302

●

www.bhojpurisahityangan.com

विज्ञान

जिनगी के जरूरत : पानी

–ई. राजेश्वर सिंह

सगरो पेड़–पौधा अउर प्राणी मात्र के जिनगी बनवले रहे खातिर पानी केतना अजूबा हउए । एकर आपन कवनो रंग ना भइलो पर इन्द्रधनुष के सगरो रंगन के धारण कइ सकेला । एकर कवनो आकार ना होला, बाकिर असंख्य आकार बना सकेला । ई जब गतिमान होला, त हाइड्रो इलेक्ट्रीसीटी जइसन शक्ति आ भारी ऊर्जा के स्रोत बन जाला । एकर शांत रूप देख के मनई ध्यान मग्न हो जाले, ध्यानावस्थित हो जालें त उग्र रूप देख के भयभीत हो जालें । कबो बरखा के रूप में वरदान बन जाला, त कबो विनाशकारी बाढ़ के रूप में जल–ताण्डव करे लागेला । साँचहूँ पानी के चरित्र अजीब बा ।

पानी के जगह–जगह अलगा–अलगा नाम से पुकारल जाला– अम्बु, जल, सलिल, तोय, वारि, पय, जीवन, अमृत । फारसी में आब, लैटिन में अक्वा आ अंग्रेजी में वाटर । पेड़–पौधन के देह में वजन के लगभग 90–95 प्रतिशत पानी रहेला । मनई के देह में लगभग 75 प्रतिशत पानी के अंश रहेला । इहे कारण बा कि मनई हो, पशु–पक्षी हो भा पेड़–पौधा, सभकर जिनगी चलावे खातिर पानी जरूरी बा । एगो मनई के आपन जिनगी खातिर रोज कम–से–कम 8–10 लीटर पानी चाहीं, संगे–संगे नहाये–धोये, खाना पकावे आदि खातिर कम–से–कम

www.bhojpurisahityangan.com

40–45 लीटर पानी आदमी पीछे चाहीं । अधिका आवादी वाला गाँवन अउर शहर जहवाँ सीवर व्यवस्था नइखे, एक मनई खातिर 70 लीटर पानी आ जहवाँ सीवर व्यवस्था बा, उहवाँ एक मनई खातिर 135 लीटर आ मेट्रोपॉलिटन नगरन में हर मनई खातिर 150 लीटर पानी के जरूरत कहल गइल ह । मनई के उपयोग खातिर निश्चित रूप से स्वच्छ पानी चाहीं । एह से वैज्ञानिक लोग मनई के जिनगी खातिर उपयोगी पानी में घुल जाये वाली घुलनशील रासायनिक तत्वन के निर्धारण कइले बाड़ें । यदि पानी में ई कुल्हि तत्व अपना निर्धारित सीमा से कम भा अधिका होखी, त देह खातिर हानिकारक होई । एह से मानसिक, शारीरिक संतुलन बिगड़ जाला आ तरह–तरह के रोग उत्पन्न होला । मानक के अनुसार, पानी में तत्वन के सीमा नीचे लिखल मात्राा में होखे के चाहीं–

मि.ली. / लीटर	अधिकता के प्रभाव
1. फ्लोराइड (f) 1-0	उल्टी, मल में खून, सर दर्द दाँत पर धब्बा, अर्थराइटिस, बाँझपन, पेट–दर्द गर्भपात, एनीमिया ।
2. लेड (Pb) 0-05	मिचली, उल्टी, पेट–दर्द, एनिमिया, गर्भपात ।
3. आर्सेनिक (As) 0-01	त्वचा रोग, एनोरिक्सिया, उल्टी, पेट दर्द, एनिमिया, कैंसर ।
4. क्रोमियम (Cr) 0-05	त्वचा रोग, खून के दबाव में कमी, सिनोजेनेसिस ।
5. जिंक (Zn) 5-00	एनीमिया, जी–मिचलाइल, उल्टी ।
6. क्लोडिन (Cl) 1-0	सिर दर्द, जी–मिचलाइल, उल्टी, हड्डी रोग ।
7. कॉपर (Cu) 0-05	एनीमिया, घाव भरे में देरी, जी–मिचलाइल, खून के दबाब अधिक
8. आइरन (Fe) 1-0	त्वचा आ पेट के विकार ।
9. नाइट्रेट (N_{o3}) 4-5	बच्चन में ब्लू बेबी रोग, गर्भपात ।
10. पारा (Hg) 0-001	दस्त, जी–मिचलाइल, उल्टी, त्वचा रोग

पानी में एह तत्वन के संतुलित मात्रा का संगे–संगे पानी के पी–एच. वैल्यू (PH) 7.0 से 8.5 के बीच रहे के चाहीं । पानी में

www.bhojpurisahityangan.com

घुलनशील ठोस (TDS) 500 से कम, कठोरता 200 मि.ग्रा प्रति लीटर से कम, मैग्नेशियम (Mg) 530 मि.ग्रा./लीटर से कम अल्म्युनियम 0.3 मि. ग्रा./लीटर, मिनरल ऑयल 0.01 मि.ग्रा. प्रति लीटर से कम होखे के चाहीं, वर्ना स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ी ।

रासायनिक तत्वन के मात्रा के संतुलन पीये वाला पानी में जरूरी बा, एकरा संगे जैविक प्रदूषण से मुक्त होखे के चाहीं । जैविक प्रदूषण के रूप में कीटाणु, फुफूंद, शैवाल, विषाणु आदि पावल जाला । इ कुल्हि संक्रामक रोग पैदा करेला । जीवाणु से हैजा, टाइफाइड, विषाणु से हिपेटाइटिस, पोलियो, खसरा, प्रोटोजोआ से पेचिस, ऑडिहासिस, कृमि से उदर में गोलकृमि, फीता कृमि, साइक्फेद्स में न्यूलिया वर्न, मच्छर से मलेरिया, फाइलेरिया, डेंगू आदि रोग होला ।

पीये भा आउरी काम खातिर पानी के संसाधन के बढ़त आबादी, बढ़त प्रदूषण के प्रभाव पानी पर बहुते असर डाल रहल बा । एकरा पर अंकुश लगावे खातिर सरकार·आ समाज, परिवार आ मनई सभे के सतर्कता से प्रयास करे के चाहीं ।

साधारणतः जल संसाधन द्वारा स्वच्छ जल खातिर सामुदायिक स्तर पर नदी, तालाब आ दूसर जल स्रोतन के प्रदूषण से बचावे के चाहीं । औद्योगिक इकाई से, नाला आदि से पानी के सीधे तालाब आ नदी में जाए से रोके के चाहीं । सामूहिक जलस्रोत, टंकी, कुआँ, पाइपलाइन आदि के प्रबन्धन जरूरी ह । एकरा अलावे पारिवारिक स्तर भा निजी स्तर पर पानी के साफ–सफाई के व्यवस्था कइल जरूरी बा । हैण्ड पम्प, बोरिंग के शौचालय के गड्ढा से दूर लगावे के चाहीं ।

शौचालय आदि के पानी नाली द्वारा तालाब नदी में ना गिरावे के चाहीं ।

कूड़ा–करकट, पॉलिथीन आदि नदी, नाला, कुआँ में ना फेंके के चाहीं । यथासंभव जल–संरक्षण के कारगर योजना बनावे के चाहीं । पानी के बारे में साँच कहल गइल बा–

जल त जिनगी खातिर बा अनमोल ।
पर बरखा का रूप में मिलेला बेमोल ।।

–66 खरैया पोखरा, वशारतपुर, गोरखपुर–273004

www.bhojpurisahityangan.com

निबन्ध

भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार : रामनाथ पाण्डेय

डॉ. नरेन्द्र नारायण सिंह
शोध निदेशक

प्रियंका
शोधार्थी

भोजपुरी एगो पुरान जनभाषा हऽ । भोजपुरी भाषा एगो भषे ना हऽ, बलुक सर्वगुण समाहित एगो संस्कृतियो हऽ आ एह भाषा में कविता, गीत, दोहा के साथे–साथे भोजपुरी गद्य साहित्य जइसे कहानी, नाटक भा उपन्यास सभे अपना पूर्ण मौलिकता के साथ उपस्थित बा ।

भोजपुरी में पहिलका उपन्यास लिखे के श्रेय श्री रामनाथ पाण्डेय जी के बा । इहाँ के द्वारा सन् 1956 ई. में लिखल 'बिंदिया' के भोजपुरी साहित्य के पहिलका उपन्यास होखे के गौरव प्राप्त बा ।

श्री रामनाथ पाण्डेय जी बिहार राज्य के सारण जिला के एकमा रेलवे स्टेशन से लगभग 4 किलोमीटर दूर बसल नौतन गाँव के निवासी रहीं । इहाँ के जनम 8 जून, 1924 ई. के सारण जिला मुख्यालय छपरा के रतनपुरा मुहल्ला में भइल रहे । इहाँ के प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा गाँवें से शुरू भइल । राजेन्द्र कॉलेज, छपरा से बी.कॉम कइलीं अउर ओकरा बाद भारतीय रेल–सेवा में बहाल हो गइलीं । रेल सेवा में अइला के बाद इहाँ के अधिका समय तक बनारस अउर मुगलसराय में ही पदस्थापित रहलीं । ई दूनों जगहा के साहित्यिक आ संस्कृतिक वातावरण पाण्डेय जी के खूबे रास आइल आ इहाँ के ओह में सक्रिय भागीदारी देबे लगनीं । इहाँ के लेखन 1948 से 2004 ई. तक अनवरत चलत रहल । एही बीच में रामनाथ जी साहित्यरत्न आ साहित्यालंकार के उपाधि हासिल कइलीं ।

रामनाथ पाण्डेय जी आपन जवानी का दिनन में उम्दा प्रेम, रोमांस आदि से भरल–पूरल बारह गो हिन्दी उपन्यास के रचना कइलीं जवन एह शीर्षकन से प्रकाशित बा– 1. पापी समाज, 2. खूनी समाज, 3. एक डाल : तीन फूल, 4. वह वेश्या थी, 5. फूल झड़ गया : भौंरा रो पड़ा, 6. बदलती दुनिया, 7. नई जिन्दगी : नया जमाना, 8. उड़ चली

www.bhojpurisahityangan.com

बदरिया काली, 9. मिटेंगे काले बादल, 10. मचलती जवानी, 11. जिन्दगी का मोड़ आ 12. कीचड़ और कमल । ई सभे उपन्यास के शीर्षक से पाण्डेय जी के सोच के भाँपल जा सकत बा । एक त जवानी के दिन, दोसर बनारस के बनारसी वातावरण के साथे–साथे 'चिनगारी' के संपादक कुशवाहा कांत आ प्यालेलाल आवारा जइसन लोगन के साथ–संघत । बाकिर ई सब बहुत दिन ले ना चल सकल आ पाण्डेय जी आपन रास्ता बदल दिहलीं ।

सन् 1952 ई. से बाबू रघुवंश नारायण सिंह जी के संपादन में मासिक 'भोजपुरी', सन् 1955 ई. से बाबू स्वामीनाथ सिंह द्वारा स्थापित आ संचालित भोजपुरी संसद, वाराणसी से 'भोजपुरी कहानियाँ' आ श्रद्धेय पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के स्थापित आ संचालित 'भोजपुरी परिवार' पटना से मासिक 'अँजोर' के पकाशन प्रारम्भ भइल आ समर्थ कथाकार रामनाथ पाण्डेय भोजपुरी में कहानी आ उपन्यास लिखे का ओर मुड़ गइलीं । इहाँ के लिखल भोजपुरी के पहिलका उपन्यास 'बिंदिया' सन् 1956 ई. में भोजपुरी संसद, वाराणसी से प्रकाशित भइल । एकर कथानक ग्रामीण पृष्ठभूमि आ तत्कालीन सामंती व्यवस्था पर आधारित रूढ़िवादी सोच–व्यवहार का खिलाफ बा । ई उपन्यास नायिका प्रधान बा । ई उपन्यास नायिका बिंदिया पर रचल गइल रहे । इ उपन्यास भोजपुरी पाठकन का बीच बहुते सराहल गइल । मसूरी से 22 फरवरी, 1957 के महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी लिखली –"भोजपुरी में उपन्यास लिखकर आपने बहुत नेक काम किया है । भाषा की शुद्धता पर आपने जितना ध्यान रखा है वह भी स्तुत्य है ।" एकरा पहिलही दिसम्बर, 1956 ई. में आचार्य शिवपूजन सहाय जी लिखलें रहीं–"छपरा के श्री रामनाथ पाण्डेय जी के लिखल भोजपुरी उपन्यास 'बिंदिया' भोजपुरी बोली में बड़ा सुन्दर उतरल बाटे । एह में देहात के किसान लोगन के चरित्र बहुत बढ़िया लिखाइल बा । मरद–मेहरारू के बोल–चाल ठीक भोजपुरिया ढंग में झलकत बा । गाँव का लोगन खातिर ई किताब बड़ा रोचक होई । देहाती लोग खातिर ओही लोग का बोली में ओही लोगन के भलाई के बात लिख के कहानी–उपन्यास छापल जाये त बड़ उपकार हो सकेला । ओह लोगन के मन भी बहली अउर लोग का शिक्षो मिली ।"

'बिंदिया' का बाद रामनाथ पाण्डेय जी के दूसरका उपन्यास

www.bhojpurisahityangan.com

सन् 1982 ई. में भोजपुरी अकादमी, पटना से 'जिनगी के राह' नाम से प्रकाशित भइल । एह में ग्रामीण परिवेश में विकसित प्रगतिशील चेतना आ मजदूरन में पनपल असंतोष के बहुत सुंदर ढंग से प्रकटीकरण भइल बा ।

ऐतिहासिक पात्र, पूरबी गीतन के रचयिता आ सिद्ध संगीतकार महेन्दर मिसिर के संपूर्ण जीवन आ संघर्ष पर आधारित नायक प्रधान उपन्यास 'महेन्दर मिसिर' रामनाथ पाण्डेय जी के तिसरका उपन्यास बा, जवन भोजपुरी के विद्वानन आ समीक्षक लोगन के बीच अपना ऐतिहासिक तथ्यन के लेके बहुते चर्चा में रहल आ रामनाथ पाण्डेय जी के आपन मान्यता के पुष्टि खातिर पत्र–पत्रिकन में लेख लिखे के पड़ल । स्वतंत्रता आंदोलन में उनकर सहयोग के मुख्य मुद्दा उठावल गइल रहे आ रामनाथ पाण्डेय जी अपना स्थापना के साबित करे में सफल भइलीं । महेन्दर मिसिर जी के पहलवान, संगीतकार, प्रेमी, स्वतंत्रता सेनानी, भक्त आ न्यायपूर्ण भारतीय आदि का रूप में बहुआयामी व्यक्तित्व बहुते निखर के आइल बा । ई उपन्यास सन् 1994 ई. में पाण्डेय जी के धर्मपत्नी श्रीमती उमा पाण्डेय के नाम पर स्थापित 'उमा–निवेश', रतनपुरा, छपरा से प्रकाशित आ जय दुर्गा प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित भइल रहे ।

'इमरीतिया काकी' रामनाथ पाण्डेय जी के चउथा उपन्यास बा, जवन ग्रामीण समस्या आ सामंती उत्पीड़न पर आधारित बा । एह में शोषित अउर पीड़ित जनता एकजुट होके सामंत–पुलिस–नौकरशाही के गठजोड़ के साजिश के विफल क दिहले बा । इहो उपन्यास जय दुर्गा प्रेस, नया टोला, पटना से मुद्रित भइल बा, जवना के भूमिका नागेन्द्र प्रसाद सिंह लिखले बानी । नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी भूमिका लिखत कहत बानीं– "श्री रामनाथ जी के भाषा सरल, प्रवाहमान आ पात्रानुकूल बा, जवना का कारण उनकर साहित्य विविधतापूर्ण क्षेत्रीयता लिहले सउँसे भोजपुरी प्रदेश में समादृत होत रहल बा ।"

सन् 1998 ई. में श्री रामनाथ पाण्डेय जी के पाँचवाँ उपन्यास "आधे–आध" में नारी सशक्तीकरण के समस्या पर बल दिहल गइल बा । महिला लोग के आधी आबादी खातिर अपना संघर्ष के औचित्य, संगठन के निर्माण आ आंदोलन के रूपरेखा कइसे बनावे के चाहीं, एह उपन्यास के कथानक एही पर आधारित बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

रामनाथ पाण्डेय जी के लगे अउरो उपन्यास आ कहानियन के पाण्डुलिपि रहल, जवन उहाँ के अस्वस्थता आ असमर्थता का चलते प्रकाशित ना हो सकल । पाण्डेय जी 16 जून, 2006 ई. के स्वर्ग सिधार गइलीं । इहाँ के निधन से भोजपुरी कथा–साहित्य के क्षेत्र में लमहर क्षति महसूस कइल जा रहल बा । एह के भरपाई कइल बहुते कठिन बा ।

रामनाथ पाण्डेय जी उपन्यास का अलावे लगभग 300 कहानी लिखलीं । इहाँ के भोजपुरी कहानियन के पहिला संग्रह 'सतवन्ती', दुसरका संग्रह 'देस के पुकार पर' आ तिसरका संग्रह 'अन्हरिया छपिटात रहे' आदि प्रकाशित भइली सन ।

रामनाथ पाण्डेय जी अपना जीवनकाल में साहित्य का क्षेत्र में गद्य विधा के यशस्वी साहित्यकार रहलीं । इहाँ के उपन्यासकार, कहानीकार आ निबंधकार का रूप में हिन्दी–भोजपुरी साहित्य में भरपूर योगदान कइलीं आ आपन नाम साहित्य जगत में अमरत्व स्वरूप स्थापित कइली ।

प्रियंका
शोध छात्रा
स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय,
आरा, भोजपुर, बिहार
मो0 : 7903222782

●

अपील

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना स्थापना काल से भोजपुरी के बढ़ंती में लागल बा । सभे भोजपुरिया लोग से निहोरा बा जे एकर सदस्य बन के भोजपुरी आंदोलन के बरियार करीं । *–संपादक*

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष
श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग'
से
दिलीप कुमार के बातचीत

यशस्वी साहित्यकार, संपादक, समीक्षक श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी से बातचीत के शुरुआत उनका से उनकर शिक्षा–दीक्षा, परिचय, पारिवारिक परिवेश आदि का बारे में पूछला पर उहाँ का गंभीर होके कहे लगलीं– हमार जनमभूई पुरनका सारण आ अब के सीवान जिला के बगौरा गाँव बा । परिवार में पढ़े–लिखे आ सामाजिक कार्य के वातावरण रहे । हमार बाबूजी चार भाइयन में दू भाई से छोट रहनी । उहाँ का धार्मिक संस्कार संपन्न अध्ययनशील व्यक्ति रहनी जिनका 'आयुर्वेद शास्त्री' आ व्याकरणतीर्थ के उपाधि प्राप्त रहे । माई गाँवे में रहत रहनी आ धार्मिक प्रवृत्ति का संगे सेवा–परायण, कष्ट सहिष्णु रहनीं । बड़का बाबूजी जानल–मानल स्वतंत्रता सेनानी रहनी आ अमर शहीद फुलेना प्रसाद आ पूर्व मुख्य मंत्री महामाया प्रसाद सिन्हा का संगे भागलपुर जेल में लगभग डेढ़ बरिस बन्द रहनी । हमार प्रारंभिक शिक्षा गाँवे में संस्कृत पाठशाला में भइल, माध्यमिक स्तर के शिक्षा गाँव से सात–आठ किलोमीटर दूर चैनपुर के भगीरथ संस्कृत उच्च विद्यालय में भइल । स्नातक (शास्त्री) आ स्नातकोत्तर (आचार्य) सीवान के बैजनाथ पांडेय संस्कृत महाविद्यालय में भइल । बाद में आचार्य, बिहार विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए., माड़वारी कॉलेज दरभंगा से बीएड. कइनी । कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय से रिसर्च स्कॉलर विद्यावाचस्पति खातिर शोध कार्य कइनी जवना में कुछ तकनीकी कारण से उपाधि ना मिल सकल । फेर पढ़े के मन कंइल आ 1980 में बिहार विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. में उत्तीर्णता प्राप्त कइलीं ।

जब शिक्षक का रूप में उनकर भूमिका पूछनी त विभिन्न विद्यालयन में कार्य करेके एगो लमहर इतिहास बतवलें । जेकरा अनुसार सबसे पहिले भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के जीरादेई से नजदीके ठेपहा के राजवंशी देवी स्मारक उच्च विद्यालय में योगदान कइनी । बाकिर कुछे मन आगे पढ़े के भइल आ स्कॉलरशिप का संगे संस्कृत कॉलेज में नॉव लिखा के एम.ए. बी–एड. कइनी । एकरा बाद गोपालपुर कोठी,, भिट्ठी, बी.आई.टी. स्कूल मेसरा, राँची के यात्रा करत फेर भिट्ठी स्कूल में वापस आ गइनी । बाद में 1995 में सामूहिक स्थानान्तरण के क्रम में कैतुकालच्छी स्थानान्तरण भइल । बाकिर कुछ दिन काम कइला के बाद मढ़ौरा हाईस्कूल में नौ बरिस काम क के 2004 में सेवानिवृत हो गइनी ।

जब हम ई प्रश्न कइनीं कि संस्कृत के जानकार भइला के बाद भोजपुरी का तरफ राउर रूझान कइसे भइल । उहाँ का आपन स्मृति के पीछे ले जात कहनी कि हमरा गाँव में एगो भरत पुस्तकालय चलत रहे जवना में रघुवंश नारायण सिंह द्वारा संपादित 'भोजपुरी' पत्रिका आ रामेश्वर सिंह कश्यप लिखित

www.bhojpurisahityangan.com

लोकप्रिय नाटक 'लोहासिंह' रहे । हमार बड़का भइया चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर' हमनी के भोजपुरी के ई किताबन के पढ़ावस आ समझावस । ओही घरी भोजपुरी का प्रति अनुराग अंकुरे लागल जवना के हमरे गाँव के पटना सचिवालय में कार्यरत सीताराम चन्द्रशरण 'राम' आगे सींचे के काम कइलें । उहाँ का कवि–एकांकीकार आ भोजपुरी परिवार के संस्थापक सदस्य रहनीं । उनका माध्यम से पांडेय नर्मदेश्वर सहाय द्वारा संपादित 'अँजोर' पत्रिका के कुछ अंक पढ़े के मिलल । एतने ना संस्कृत कॉलेज में पढ़े के क्रम में प्राचार्य आ हिन्दी, संस्कृत–भोजपुरी के साहित्यकार श्रीराम चन्द्र त्रिपाठी के संपर्क में कुछ रूझान भइल । एह रूझान में खाद–खरी के काम कइल समय–समय पर नामी भोजपुरी साहित्यकार महेन्द्र शास्त्री जी के काव्य–पाठ आ प्रवचन । संस्कृत साहित्य के अध्ययन के कारण छन्दशास्त्र आ विभिन्न सैद्धान्तिक पक्षन के जानकारी भोजपुरी साहित्य सृजन में मददगार साबित भइल । एक बात साफ बा कि कवनो क्षेत्रीय भाषा में स्तरीय रचना खातिर हिन्दी, संस्कृत, उर्दू भा अंग्रेजी कवनो एक भाषा के गंभीर अध्येता भइल अच्छा होला ।

बातचीत के आगे बढ़ावत हम सीधा सवाल कइलीं कि रउरा त भोजपुरी में काव्य, कथा–साहित्य आदि सब पर कलम चलवले बानी, बाकिर ई बताईं राउर कवन विधा विशेष में अधिका रूचि बड़ुवे । उहाँ का आपन साहित्य यात्रा के वर्णन करत बतवनी कि छन्दोबद्ध कविता, खास क के गीत से आरंभ भइल । उनकर लेखन के पहचान बनल 1978 में प्रकाशित हास्य–व्यंग्य काव्य 'श्री हीरो चरित मानस' से । एह रचना के चर्चा डॉ. शालिग्राम शुक्ल 'नीर' 'आधुनिक अवधी–भोजपुरी : इतिहास आ काव्य' नामक शोध ग्रंथ में आ डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़' आपन शोध–ग्रंथ भोजपुरी साहित्य में हास्य व्यंग्य में कइले बानी । हमरा खुशी भइल ई जान के संत जेवियर कॉलेज, राँची के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. बनेश्वर पाठक आपन 'हीरो चरितम्' के रचना में 'हीरो चरित मानस' से प्रेरणा मिलला के चर्चा कइले बानी । आउरी काव्य विधन में मुलछंद कविता, गजल, मुक्तक, सवाई, हाइकू, दोहा कुण्डलिया आ गद्य में कहानी, लघु–कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध समीक्षा लिखत आ छपत रहल बा । एने कुछ बरिस से पद्य रचना नइखे हो पावत बाकिर जरूरत आ मित्रन के दवाव ये निबंध, समीक्षा आदि लिखात रहेला । इहो मानल जा सकेला कि उमर का मोताबिक काव्योचित भाव तरंग के अभाव आ वैचारिक स्तर बढ़ला से गद्य लेखन में रूचि बढ़ल बा ।

आगे हमार सवाल रहे उनकर पत्रकारिता के संबंध में । हम पूछ बइठनी कि रउरा 'बिगुल' पत्रिका के जरिये पत्रकारिता से भी जुड़ल रहल बानी । भोजपुरी पत्रकारिता के भूमिका पर संक्षेप में प्रकाश डाले के कृपा करीं । उहाँ का लगले शुरू हो गइनी –'हम 1990 में भोजपुरी तिमाही पत्रिका 'बिगुल' के संपादन से पत्रकारिता के शुरुआत कइलीं । पत्रिका के तीन गो सामान्य अंक, चार गो कविता विशेषांक, तीन गो लघुकथा विशेषांक आ एगो भोजपुरी शिरोमणि श्री अक्षयवर दीक्षित विशेषांक प्रकाशित भइल । हमरा पत्रकारिता के विशेषता रहल कि चारो कविता विशेषांकन से जुड़ल ओह समय के जीयत 205 कवियन का रचनन के जोड़ के महेश्वराचार्य आ डॉ. विश्वरंजन का भूमिका के संगे एगो काव्य संग्रह 'काव्या' नॉव से 1993 में प्रकाशित भइल । ओही साल दीक्षित जी

www.bhojpurisahityangan.com

के विशेषांक के सामग्रियन के समेट के 'भोजपुरी शिरोमणि अक्षयवर दीक्षित : व्यक्तित्व आ कृतित्व' प्रकाशित भइल । बिगुल के तीनो लघुकथा विशेषांकन के 89 लघु कथाकारन के लघुकथा का संगे नागेन्द्र प्रसाद सिंह आ अतुलमोहन प्रसाद के लघुकथा विषयक निबंध मिला के 'तिरमिरी' नॉव से एगो लघुकथा संग्रह प्रकाशित भइल । भोजपुरी पत्रिका के विशेषांकन के पुस्तकाकार प्रकाशन के एगो महत्व होला । खुशी के बात बा कि भोजपुरी सम्मेलन पत्रिको का ओर ई काम हो रहल बा ।

अइसे त भोजपुरी में केतने पत्रिका निकल के कुछुए समय में दम तूर दिहली बाकिर कुछ पत्रिका समय से निकलल आ भोजपुरी पत्रिका के मानदण्ड काया कइलस । अइसन पत्रिकन में स्व. रघुवंश नारायण सिंह के 'भोजपुरी', स्व. नर्मदेश्वर सहाय जी के अँजोर के ऐतिहासिक महत्व बा । एह पत्रिकन के भोजपुरी रचनाकार पैदा करे आ रचनन के सँवारे सजावे में सराहनीय योगदान रहल बा । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सम्मेलन पत्रिका भोजपुरी आन्दोलन के गतिशील बनावे में प्रयत्नशील रहल बा आ हर परिस्थिति के सामना करत आपना गरिमा कायम राखे में सफल रहल बा । विश्व भोजपुरी सम्मेलन (देवरिया) से प्रकाशित समकालीन भोजपुरी साहित्य के 'कहानी अंक', 'कविता अंक' आ 'संस्मरण अंक' सराहेजोग रहल बाड़े बाकिर एकर नियमित प्रकाशन नइखे हो पावत । कोलकाता से 'भोजपुरी माटी', बलिया से 'पाती' के प्रकाशन लगातार हो रहल बा । विश्व भोजपुरी सममेलन पत्रिका एने बन्द भ गइल ह । डॉ. अनिल कुमार पांडेय जइसन प्रधान संपादक आ समर्पित व्यक्तित्व के दारूण विछोह से अपना के उवार के पत्रिका संपादक डॉ. लाल बाबू तिवारी आ रउरा सह संपादक के रूप में जुड़ के भइल प्रयास सहारे जोग रहल । भोजपुरी पत्रिकन का माध्यम से भोजपुरी भाषा, साहित्य आ आन्दोलन के हमेशा गति मिलल बा एह से भोजपुरी पत्रकारिता के भूमिका नकारल नइखे जा सकत । भोजपुरी पत्रिकन के सदस्य बने आ आर्थिक सहयोग देके प्रकाशन में सहयोग देवे के भाव भोजपुरिया भाई लोगन के अपना मैथिली आ बंगाली भाइयन से सीखे के चाहीं ।

'भोजपुरी आन्दोलनों में राउर सक्रिय भागीदारी रहल बा । भोजपुरी आन्दोलन के दशा आ दिशा पर रउरा का कहे के बा जब पूछलीं त ऊ कहलें– दिलीप जी, हम 1977 में सीवान में भइल अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन आ ओकरा आन्दोलन से जुड़ल बानी । अगर भोजपुरी आन्दोलन के लेखन, प्रकाशन, आम आदमी से भोजपुरी साहित्य के जुड़ाव आ संवैधानिक मान्यता संबंधी तीन बिन्दुअन के ध्यान में राख के देखल जाव त पिछिला चालीस सालन में भोजपुरी के हर विधा में पर्याप्त लेखन आ प्रकाशन भइल बा जवन संतोष के बात बा । बाकिर एह में रचल साहित्य साहित्यकारे लोगन तक अधिकांश सिमट के रह गइल बा । जनमानस तक पहुँचावे के कवनो कारगर प्रयास ना हो सकल आम आदमी तक एह साहित्य के ना पहुँचला के कारण भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के आन्दोलनो भोजपुरी क्षेत्र के जन आन्दोलन ना बन सकल । लोकतंत्र में 'लोक' यानी आम जन समूह के आवाजे दूर–दूर तक सुनल जा सकेला तबे सरकार के कुंत्र करनी नींदो टूटी ।

www.bhojpurisahityangan.com

एह मॉग खातिर दस–पॉच आ सै आदमी दिल्ली जाक महामहिम राष्ट्रपति जी भा प्रधानमंत्री जी के ज्ञापन सउँप के मंच पर नेता लोग से मान्यता खातिर कबुलवा के ताली पीटला के जुग बीत गइल । अब जरूरत बा मंगल पांडेय आ बाबू कुँअर सिंह जइसन भोजपुरिया तेवर आ समर्पण के ।

रउरा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 24वॉं सत्र के अध्यक्ष रह चुकल बानी । अध्यक्ष का नाते ओह में का गड़बडी बुझाइल आ सुधार का दिशा में का प्रयास रहल ? एह पर उहॉं का कहनी कि हमरा 26–27 नवम्बर 1911 में जमशेदपुर अधिवेशन के अध्यक्षता करे के अवसर मिलल । ऊ हमरा जीवन के अविस्मरणीय अवसर रहल । अध्यक्ष का नाते सम्मेलन में गड़बड़ी खोज के ओह में सुधार करे का बारे में सोचल हमरा प्रकृति के अनुकूल ना बुझाइल । संगही इहो सोचे के बात बा कि कवनो आई.एस. अधिकारी के पद ना ह कि अपना पावर के उपयोग कके विशेष सुधार के काम कइल जा सके । हमरा अध्यक्ष भइला के पहिलही सम्मेलन पत्रिका के कुछ यादगार विशेषांकन के प्रकाशन आ ओकर पुस्तकाकार रूप में 'दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती' आ 'बिहार के भोजपुरी रतन' नॉव से पुस्तक के प्रकाशन भइल । एह काम में प्रो. ब्रजकिशोर, डॉ. जौहर शाफियाबादी, डॉ. गुरूचरण सिंह, डॉ. महामाया प्रसाद विनोद आ डॉ. जीतेन्द्र वर्मा के आर्थिक आ संपादन सहयोग सराहे जोग रहल बा । 28–29 दिसम्बर 2013 में पटना में आयोजित 25वॉं अधिवेशन में कुछ वरिष्ठ भोजपुरी सेवियन के मंच पर देख के मन के बहुत संतोष मिलल बाकिर कुछ भाइयन के पटना में रहलो पर सम्मेलन स्थल पर ना देख के दिल पर चोटो कम ना लागल । कारण कवनो होखे बाकिर भोजपुरी आन्दोलन के गतिशील बनावे खातिर एकर निवारण जरूरी बा ।

हम आगे सवाल उठवनी कि संस्कृत साहित्य का तुलना में भोजपुरी साहित्य के रउआ कहॉं पावतानी, का भोजपुरी साहित्य में हो रहल लेखन से रउआ संतुष्ट बानी ?

एह सवाल पर उहों का कहे के शुरू कइनी दिलीप जी रउआ जानतानी संस्कृत विश्व के प्राचीनतम भाषा ह आ ई ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, इतिहास, धर्मशास्त्र, अध्यात्म चिकित्सा आदि विविध विषयन के अपना में समेट के काफी संपन्न रहलि बा । एह से हजारन बरिस से विकसित आ विश्व जनमानस पर आपन अमिट छाप छोड़े वाली संस्कृत से भोजपुरी के तुलना कइल अभी जल्दबाजी होई । अभी त बंगला, गुजराती, मराठी, आदि साहित्य से भोजपुरी के तुलना करे के चाहीं, जवन कमी लउके ओकरा दूर कके अपना साहित्य के उठावे के प्रयास करे के चाहीं ।

कुछ आउरी सवालन का बाद भोजपुरी पत्रिकन खातिर उनकर संदेश मंगनी त ऊ कहलीं कि– हम भोजपुरी पाठकन से इहे कहे के चाहब कि रउआ सभे जइसे अपना जनम देवे वाली माई के आदर दीले उहे आदर लड़काई में अपना माई के मुँह से सुनल माई भाषा भोजपुरी के दीहीं आ घर–बाहर भोजपुरी बोले में गर्व करीं ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

पूत के पाँव पलने में बचन के पक्का : सादगी के प्रतिमूर्ति

–डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

बात आज से सै बरिस से अधिका पहिले के बा । इहे अक्टूबर के महीना रहे । ठीक गॉधी जी के जनम दिने के दिन उत्तरप्रदेश में एगो लड़िका जनम लिहल । साधारण परिवार में लड़िका सबसे छोट रहे । सभे ओकरा के खूब माने । बाकिर ऊ डेढ़े बरिस के रहे त ओकरा माथा पर विपत्ति के पहाड़ टूट पडल । ओकरा सिर से पिता के साया उठ गइल । बाकिर माई धीरज के देवी रहली । धार्मिक प्रद्धति के माई भगवान भरोसे लड़िका के लेके अपना बाबूजी के पास चल गइलीं । लड़िका के पालन–पोषण होखे लागल । कहल जाला कि बिपत्ति कबो अकेले ना आवे । बात साँच भइल, लड़िका के नाना के निधन भ गइल । उनकर छोट भाई घर के देख–भाल शुरू कइलें । लड़िका के माई घर के सगरी काज अपने करे के जिम्मा लिहली । बाकिर हालत ना सुधरल । लड़िका के स्कूल जाए में एगो नदी पड़त रहे । नाव पर चढ़ के नदी पार करे में उतराई लागत रहे । पइसा के अभाव में लड़िका अंगोछा पेन्ह के कपड़ा आ किताब के बस्ता माथा पर राख के नदी पार करत रहे । बचपन के पढ़ाई खतम भइल । आगे बनारस जाके पढ़े के सवाल उठल । माई कवनो दोसर उपाय ना देख के अपना दूर के एगो भाई के घरे लड़िका के राख दिहली । ओह मामा के घरे लड़िका के संगे नीमन व्यवहार ना होखे । समझीं कि घर के सगरी काम एकरे माथे ठोक दिहल जात रहे । लड़िका सहनशील रहे । सब खुशी–खुशी करे आ पढ़े । एही बीच ओह घर में एगो आउरी गरीब लड़िका रहे । एक बेर ओकरा हैजा भ गइल । ऊ लोग ओकरा लगे ना जाए ना केहू के जाए देवे । लड़िका मू गइल । एतने ना, ओकर कपड़ा–लत्ता केहू ना छुए । ऊ कुल्हि कपड़ा साफ करे के भी काम उनके दिआइल । एही बीच एक बेर माई देखे अइली ।

www.bhojpurisahityangan.com

लड़िका माई के देख के भोंकार पार के रोए लागल । बाकिर माई करेजा पर पत्थल राख के सब देखली आ भगवान पर भरोसा करत मने–मने कहली कि जेकरा कोई ना होखे, ओकरा के भगवान देखेलें । बात साँच भइल । ऊ लड़िका के पढ़ाई–लिखाई देख के एगो मास्टर साहेब आ उनकर पत्नी लड़िका के अपना संगे राखे लगलें । बाकिर लड़िका के मन में भइल कि मास्टर साहब पर भार बनल ठीक नइखे, ऊ फेर अपना मामा के घरे चल आइल । मास्टर साहब के बात बुझा गइल । ऊ लड़िका के बोला के कहलें कि तू हमरा घरे रहऽ आ हमरा लड़िकन के पढ़ावऽ । लड़िका बात ना टरलस । ऊ रहे लागल । मन से लड़िकन के पढ़ावे लागल । जब मास्टर साहब लड़िका के ट्यूशन फीस देवे लगलें त ऊ लौटा दिहलस आ कहस कि लड़िका लोग हमार भाई बा ।

ऊ लड़िका कवनो आउर ना रहे । ऊ रहलें लाल बहादुर शास्त्री, जे कालक्रम में आजादी के लड़ाई में पढ़ाई छोड़ के कूद पड़ले । मंत्री भइले । प्रधानमंत्री भइले । रेलमंत्री का रूप में एगो रेल दुर्घटना भइला पर मंत्री पर से इस्तीफा दे देलें । जब प्रधानमंत्री भइले, त अमेरिकी धौंस का आगे ना झुकले आ उहाँ से गेहूँ लिहल बन्द कके एक शाम अन्न ना खाए के सफल आहावान कइले । किसानन के मनोबल बढ़ा के देश के अनाज का मामला में आत्मनिर्भर बनवले । जब पाकिस्तान से लड़ाई ठनल त कहलें, हम टेबुल पर लड़ब सेना मैदान में लड़ी । पाकिस्तान के लड़ाई में पीछे ढकेल देलें । बाकिर समझौता के बात आइल त रूस गइलें । जाए के बेर लोग पूछल, रऊआ छोट कद काठी के बानी, अयूब खाँ त लम्बा बा, कइसे बात करब, त ऊ कहलें कि अयूब खाँ सिर झुका के बात करिहें आ हम सिर उठा के बात करब । एतने ना, इहो कहलें कि हम आपन जीतल जमीन वापस ना करब आ अगर वापस करे के पड़ी त लौट के ना आइब । साँचहूँ बचन के एतना पक्का निकलले कि रूस के दबाव में समझौता में जमीन लौटावे के पड़ल, बाकिर ओही रात उहाँ का आपन प्राण त्याग दिहलीं । 'जय जवान : जय किसान' के नारा देबे वाला भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री के जनम 2 अइक्टूबर, 1904 के भइल रहे आ सादगी के बेमिसाल जिनगी जीयत 11 जनवरी, 1966 के एह संसार से विदा भ गइलें ।

–बी–12, आश्रय अपार्टमेंट, आरा गार्डेन रोड,
जगदेव पथ, पटना–14

www.bhojpurisahityangan.com

जिनगी के तस्वीर : अन्हार के साँच

–रामेश्वर नाथ मिश्र 'विहान'

हिन्दी–भोजपुरी साहित्य के नामचीन सशक्त हस्ताक्षर कथाकार अतुल मोहन प्रसाद के सद्यः प्रकाशित कहानी–संग्रह 'अन्हार के साँच' यथार्थ का नेंव पर आधारित एगो अइसन संग्रह बा, जेकरा पढ़े के शुरू करेला त पाठक बिना खतम कइले छोड़े ना । नीमन कहानी के इहे विशेषता होला कि पाठक पढ़ल तबले नइखे छोड़त, जबले ऊ आखिर तक पढ़ ना लेबे ला । एह कहानी संग्रह में घर–आँगन, गाँव–जवार में दिन–प्रतिदिन घटित हो रहल घटनन के शब्दन के धागा से कल्पना के आकर्षक परिधान में बूनल गइल बा । एह कहानियन में भावना से रंग–रोगन कइल चरित्रण का रूप में गढ़ल जीयत–जागत माटी के मूरत आँखि के आगा से हटते नइखे।

एह संग्रह के कहानियन में समाज के हकीकत के बखूबी चित्रण देखे के मिलेला । कहल गइल ह कि जवना कहानी में अनन्त जिज्ञासा होला, ऊ कहानी कहानियन में मील के पत्थर साबित होला । प्रो. ब्रजकिशोर एह संग्रह पर आपन प्रतिक्रिया व्यक्त करत कहले बाड़ें कि 'अन्हार के साँच' में जिनगी के अँजोर भरल बा । रचनाकार के मस्तिष्क के जइसहीं कवनो घटना छुएला, ऊ छुई–मुई के पतइन जइसन सजग हो जाला, ओकरा कलमबद्ध कके पाठकन का आगा परोस देवे ला । रचनाकार के प्रतिभा का अनुसार पाठकन पर ओकर रचना के प्रभाव पड़ेला । अतुल जी के कहानियन के पढ़ला पर एगो सुखद अहसास होला आ लागेला कि कुल्हि कहानी अपने बीच के भा आस–पास के बिया । इनकर कहानियन के रचना शैली, शिल्प विधान, विषय–वस्तु आ भावबोध बरबस पाठकन के अपना ओर आकर्षित करेला । इनकर कहानी एक ओर सामाजिक कुव्यवस्था पर चोट

www.bhojpurisahityangan.com

करत बिया, त दूसर ओर सुलगावत बिया विद्रोह के आग । सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विषयन पर आधारित कहानियन में आंचलिकता के पुट सोना में सुहागा के आभास करावेला ।

प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के 'जय जवान–जय किसान' के नारा के मुँह बिरावत 'सेन्ह' कहानी में सकलदीप हाडतोड़ मेहनत कके धान उगावेला आ ओकरा पाँच सौ सत्तर का जगहा चार सौ नब्बे रुपया मिलेला बाकिर अस्सी रुपया बिचौलिया आ सरकारी कर्मचारी घपच जाला । ई घटना सीधा व्यवस्था आ भ्रष्टाचार के भंडाफोड़ करत बा । दोसर कहानी 'सटल घर : फरक जिनगी' में आज के शहरी जिनगी के वीभत्स चित्रण बा । शहर में आदमी–आदमी में केतना दूरी रहेला, ई देखे के मिलेला एह कहानी में, जब उमेश घर में मू जाला आ तीन दिन तक अड़ोस–परोस केहू ना खोज, खबर लेवेला कि काहे कमरा बन्द बा आ ऊ देखाइयो नइखे पड़त । इहे शहरी जिनगी के साँच बा ।

गाँव–जवार में कवनो घटना घटेला, त लुत्ती लेखा चारू ओर पसर जाला आ लोग ,मदद में दउड़ पड़ेला, बाकिर शहर में एके मकान में सटल–सटल फ्लैट के रहेवाला लोग एक–दूसरा से अलगा अर्थ का पीछे दउड़त रहेला । रत्तियो भर संवेदना ना पावल जाला । 'ठोकर' कहानी में नायक कुसंगति के कारण चौर कर्म में लिप्त हो जाला । बाकिर ई बात साँच बा कि ठोकर लगला पर आदमी के बुद्धि खुलेला, ओकरा माई के विश्वास बा कि एक दिन राम आसरे जरूर सुधरिहें । साँचहूँ एक दिन जब एगो अइसन चोर संघाती से भेंट होता जे आपने सामान चोरी कराके फँसावे के चाहत बा, तब रामआसरे के आँख खुल जाता आ माई के उमेद फुला जाता । अइसने एगो कहानी बिया 'गोहार' । 'गोहार' में सोनू एगो गबरू जवान बा । सभे ओकरा अपना दल में समेटे के कोशिश करेला, बाकिर सोनू कवनो दल में नइखे जात । कवनो रंगदारी में सहयोग नइखे करत । सोनू के सुभाव के ई कुल्हि काम उल्टा बा । सोनू के सद्विचार तब देखे के मिलेला, जब भारत माता के रक्षा खातिर गोहार भइल त सबसे पहिले आगे बढ़ल आ देश खातिर शहीद होके सउँसे गाँव के आपन लोहा मनवावे में सफल भइल ।

संग्रह के चउथा कहानी ह 'कुकुर के पोंछ' । एह कहानी में कवनो घटना के अमीर का संगे घटे में आ उहे घटना गरीब का संगे घटे में लमहर अन्तर देखे के मिलेला । कहानी में दूगो घटना एके तरह के घटत बा । शोभा एगो गरीब लइकी बिया । कॉलेजे कैम्पस में एगो लफंगा ओकरा से छेड़खानी करत बा । ऊ लफंगा का गाल पर तमाचा जड़ के प्रिंसिपल

www.bhojpurisahityangan.com

साहेब के पास शिकायत करत बिया, बाकिर ऊ अनसुना कर देत बाड़ें । ठीक ओइसने घटना एगो पुलिस पदाधिकारी के लइकी के संगे घटत बिया, त पुलिस से लेके प्रिंसिपल तक ऐक्शन में आ जालें । कहानीकार अइसन दुरंगी व्यवहार के तुलना 'कुकुर के पोंछ' से कइले बाड़ें । संग्रह के मथेला जवन कहानी पर आधारित बा, ऊ कहानी बिया 'अन्हार के साँच' । लइकी के जनम भइला पर घर में उदासी छा जाला । एह में दोस मरद के बा कि मेहरारू के ई केहू ना सोचे, सभे मेहरारुए के अपराधिन साबित करे लागेला । एहु से अधिक अचरज के बात ई बा कि मेहरारू पर आरोप लगावेवाली सास, भा ननद रधिया एकर जीयत जागत उदाहरण बिया । एह संग्रह के कहानियन में 'कामरेड के साँच' कहानी में राजनीति में लागल नेतवन के कमाये–खाये के प्रवृति उजागर भइल बा त 'मन मानत नइखे' में धन–सम्पत्ति खातिर भाई–भाई एक–दोसरा के दुश्मन हो जाता । एह में एगो मार्मिक साँच के चित्रण बा । देवना के चलते परिवार उजड़ गइल । उहे देवना भिखारी बनला का बादो रामरतन आ ओकरा मेहरारू के मन नइखे बदलत । 'चेहरा' में मशीनी युग में संवेदना खतम हो जाता, दिलो मशीन बन जात बा।

'हड़ताल' में जवन काम मास्टर लोग करेले, उहे काम जब लइका करेला त मास्टर साहब लोगन के खराब लागेला । ई विचार के दोहरा स्तर के प्रकट करेला हिन्दू–मुस्लिम एकता पर आधारित कहानी 'खुदा के मुहर ना लागल' में, 'चरतल्ला', 'हथियार', 'रिश्ता' आदि कुल्हि कहानी समाज में व्याप्त यथार्थ के सच्चाई उजागर करत बिया ।

एह किताब के अतुल जी अपना माई के समर्पित कइले बाड़ें । साँचो कहानी के कहानी त माई, दादी, नानी से बचपन में सुनल किस्सा कहानिए से नू शुरू होला । एह से समर्पण के सबसे बड़ अधिकार उहे लोगन के बा । राजकुमार 'चित्रक' के बनावल किताब के आवरण जे.एम. कम्प्यूटर राजीव के अक्षर–संयोजन आदि प्रशंसनीय बा । कुल्हि दमगर कहानी स्वागत योग्य बिया ।

'अन्हार के साँच', लेखक–अतुल मोहन प्रसाद, प्रकाशक–अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पृष्ठ–103, मूल्य–दू सौ रुपया मात्र।

–अध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, पटना, जिला इकाई बक्सर, उपाध्यक्ष– बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना जिला इकाई बक्सर

www.bhojpurisahityangan.com

बच्चू पांडेय जयन्ती समारोह

विगत 5 अगस्त के सारण के प्रख्यात साहित्यकार स्व. बच्चू पांडेय के जयन्ती समारोह छपरा के चन्द्रावती ऑडोटोरियम में 'बच्चू पांडेय कला वीथी' के तत्वावधान में आयोजित भइल । समारोह के उद्घाटन करत विधान पार्षद डॉ. वीरेन्द्र नारायण यादव कहले कि बच्चू बाबा अपना साहित्य के माध्यम से समाज आ रचनाकारन के पथ–प्रदर्शन करत रहलें । एह अवसर पर एह साल बच्चू पांडेय सम्मान से हिन्दी–भोजपुरी के जानल–मानल साहित्यकार श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक योगदान खातिर– प्रशस्ति–पत्र, प्रतीक चिन्ह आ अंगवस्त्रम् देके सम्मानित कइल गइल । एह अवसर पर डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित', डॉ. महामाया प्रसाद विनोद, डॉ. सुधाबाला, डॉ. पी.पी. सिन्हा, मंजूर हसन, चन्द्रिका यादव आदि अतिथि गण समारोह के संबोधित करत स्व. पांडेय के एगो कालजयी साहित्यकार कहल । श्री ज्योतिष पांडेय जी आगत अतिथियन के स्वागत कइलें आ समारोह के अध्यक्षता डॉ. उषा वर्मा जी कइलीं ।





समारोह के अन्त में एगो सफल कवि सम्मेलन भइल, जवना में सुभाष चन्द्र यादव, वीरेन्द्र मिश्र अभय, संजय मिश्र, राधिका रंजन, परवाना सिवानी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, महामाया प्रसाद विनोद, दक्ष निरंजन शंभु, रिपुंजय निशांत, सुहैल हाशमी, दिलीप शर्मा, कवीन्द्र, अशोक शेरपुरी आदि कवि लोग आपन कविता प्रस्तुत कइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा एवं साहित्य पर गोष्ठी



प्रभा–खेतान फाउन्डेशन, आखर एवं मसि इंक के संयुक्त तत्वावधान में पटना के बी.आई.ए. सभागार में विगत 20 अगस्त के भोजपुरी भाषा आं साहित्य पर आयोजित संगोष्ठी आयोजित भइल । एह अवसर पर डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर बेबाकी से आपन विचार प्रस्तुत कइलें । डॉ. पीड़ित कहलें कि जीवन के सगरी रंग भोजपुरी साहित्य में पावल जाला । भोजपुरी के पाले एगो व्यापक जने साहित्य बा जवना में रोपनी, कटनी, विवाह, जन्म–मरण बिछोह आदि के समावेश बा । भारत के आजादी के संघर्षो में भोजपुरी के महत्वपूर्ण योगदान रहे । भोजपुरी में कविता, कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि कुल्हि विधा के साहित्य के अकूत भंडार बा । एह बात पर दुख प्रकट कइल गइल कि बीस करोड़ लोगन के समृद्ध भाषा भोजपुरी अबहुँओं संविधान के अष्टम सूची से वंचित बा ।

समारोह में डॉ. पीड़ित से बात–चीत युवा साहित्यकार डॉ. जीतेन्द्र वर्मा कइलीं आ समारोह के संचालन आराधना प्रधान कइलीं । एह अवसर पर समारोह में उपस्थित रहलें डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ. महामाया प्रसाद विनोद, तुषारकांत उपाध्याय, अनीश अंकुर, जय पकाश, एन.के. नंदा, शिवदयाल, अविनाश गौतम, सत्यम आदि ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के भगीरथ
आचार्य पाण्डेय कपिल

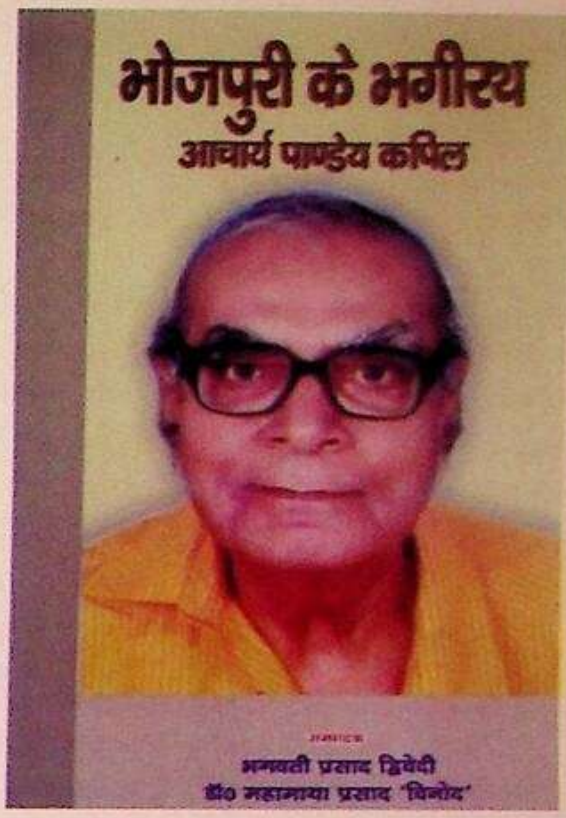

सम्पादक :
भगवती प्रसाद द्विवेदी
डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'

₹ 250/-

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
बी–12, आश्रय होम्स, आरा गार्डेन रोड, बेली रोड, जगदेव पथ, पटना – 800 014

R.N.I. Regd. No.- 58956/90
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

Postal Regd. No.- Pt-428/90
जनवरी-मार्च- 2019

शान्ति प्रसाद जैन महाविद्यालय, सासाराम

(वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की अंगीभूत इकाई)

कैमूर पर्वत श्रृंखला के कोण में अवस्थित यह महाविद्यालय प्रारंभ से ही शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अग्र धावक रहा है। आज भी यह महाविद्यालय अपनी उपलब्धियों और विशेषताओं के कारण प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

मुख्य विशेषताएँ

- स्नातक (प्रतिष्ठा) एवं स्नातकोत्तर स्तर के पठन-पाठन की सुविधा।
- छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास की सुविधा।
- समृद्ध केन्द्रीय पुस्तकालय के अलावा प्रत्येक विभाग में विशेष अध्ययन एवं शोध के लिए सेमिनार, पुस्तकालय की सुविधा।
- NCC के दो यूनिट सक्रिय।
- NSS द्वारा अपने दो यूनिट के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय सेवा एवं सहयोग की भावना का प्रसार।
- परिसर में इग्नू के अध्ययन केन्द्र की सुविधा।
- BCA, BBA, Biotech एवं बी०एड० पाठ्यक्रम का डिग्री स्तर की शिक्षा।
- Hardware पाठ्यक्रम के डिप्लोमा स्तर की शिक्षा
- महादलित, दलित एवं अत्यंत पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की रिमेडियल कोंचिग प्रारंभ





डॉ. गुरुचरण सिंह
प्राचार्य